

DPN 6592

कौतुकचिन्तामणि / KAUTUKACINTĀMAṆI

Title :

Run. No. 7317

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Ayurveda*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 35.5 x 8

Folios 77  
(missing 23)  
Chapt. / act /

Lines ( in a page ) 7

Compl. / Incompl.

Author / translator *सुनृतवादी*

Scribe / donor

*हरिहरानन्द वैद्य*

Date: NS / SS / VS / KS 789

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : *Together with Viṣayāsūci*

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / *one side yellow*

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : *इति श्रीमहाराजाधिराज प्रतापरुद्रदेव राजपतिपादारविन्द-*

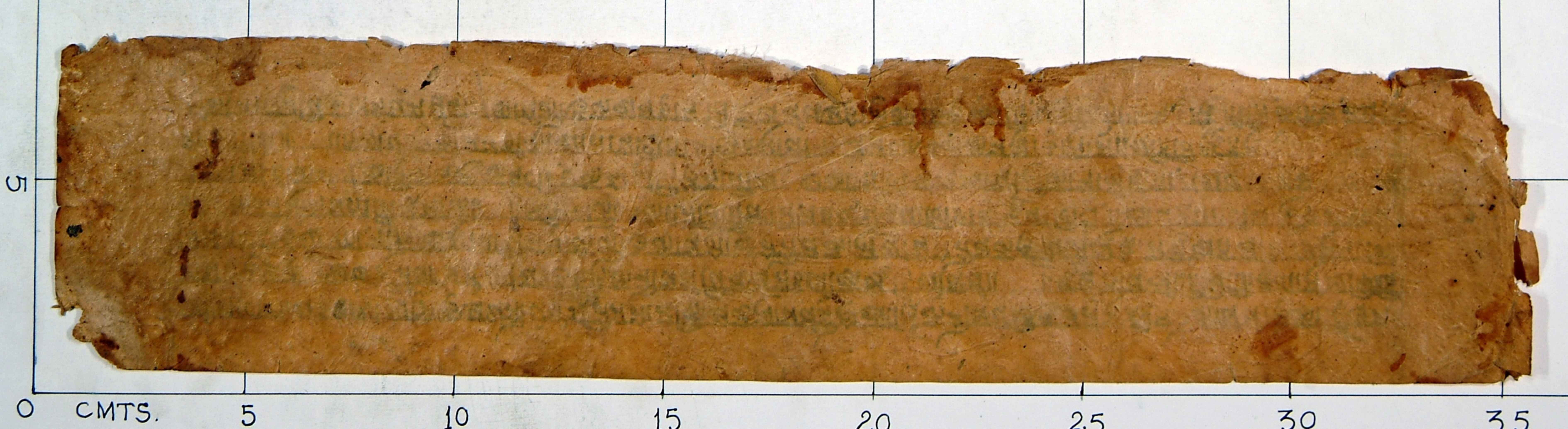
*षट्पदायमान मानसैव सकलविद्वज्जनचरणपरिचरणसंपादित प्रज्ञाविभवेन  
चतुरचारसिक श्वेतनागभायाभंडार धूर्तकृतिविविधविरुद्धविचिन्नेन*



विश्वेश्वर महाप्रसाद सुतेन कंदवेश्वर। द्रव्यास्थान महाप्रसादिना सुवृत्तवा-  
दिना विरचित कौतुकचिन्तामणि ग्रंथे कौतुकनिरूपणं नाम तृतीयो  
दीप्तिः समाप्तः ॥ ॥

संवत् १८८८ मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठ्यादित्ये संपूर्ण ॥







15

को

2

एषीगलेनायनमः॥ ब्राह्मण्यथमोषधंभूतिमनाम्किपवृथाषधंदेह्यार्हिकनोषधविदुवनसजीवनेकाषधं। रुकाहिषग  
 मोषधंरुतहययधर्मनेकोषधं (प्रयः४५) कनोषधंविबुधनः४५ श्रीकृष्णदिशोषधं॥ ॥ पूर्वतोवनीतिचिकित्सा॥ स्याद्विधि  
 विधनाअस्तेयवतानास्तेयसनाग्निनस्यककोडकावलोकनमेवकालयायनमेवकरुवमिस्युकमवृधतथापावसनालि  
 कोडकानिसेकयतातिनूयते॥ ॥ तानिचकोडकानिविविधानिच॥ अथनूपालिशकनूपालिचतुकाथनूपालिचसुहृन्वणी  
 कनलवाजीकनलकहिमवसुकनली वक्रदाहादिहृदयानिचक्रयकानालिङ्गनाकाथलंकागालंकागशययथाहृयात्मकका  
 यनूपालि॥ ॥ तजार्थलंकावर्गकावातायणितायणितसाधनप्यनकोडककनलवाहाना॥ अतिविस्तृतत्वाहान्यथकशक  
 लंकायवस्तुपिहोषधंमवेष्टाभवापिकोडकव्यवहानविचिखर्वधयहलिकाविहृक्कादि॥ एषकोकनयसुहृतीति कतिचनयसु

10

७

यकउहयविधानागमखिलकोडकागतत्वात्॥ ॥ कोडकलीसमानभव॥ तजोवद्वनूपाय्ययन॥ तजकोडकयथाकायकाय  
 तिकलपयागसंहावतयास्वगरीवनकलपूर्वकभवकोडकानिययीतीत॥ ॥ तथस्वा॥ तासानंधदयल्लिखा॥ मयतनततमस्व  
 क्रिपदिम्वरुलंययकयागेनहिताधत्॥ तगयाजितनयसुतगनलाधधृप्रित॥ पूर्वतकाविधिकलायम्याकोडकमाचनत॥ वि  
 नावकाविधानेनयः४५कंनसिमीदति॥ तथयापय॥ हस्मलायवादिमूलेषुकष्विकोडकानियथा॥ गष्वयथमंयककदसिनीध  
 नंक्रवीती॥ ॥ तस्यकायसु॥ ममनततमूलचक्रयात्यादीलुलीयकं। मंतनिमात्यासंयकंनकसूडपुर्वेस्यत॥ तनति॥ ॥ तस्य  
 लोकस्यदृष्टिर्वध४५जयत। घनतालकयर्चांगकनकनयताधवा॥ मृदिकामवलोकाययादस्यादृष्टिर्वधनीत। स्वपादधनयधनपि  
 यस्मिंधंसिकोडकं॥ ॥ तजोविजिगीषाज्यायायतयाअपकिर्णयनसंनारुमृननिदूयत॥ रुनीमदंगपेटहंमदानीचलकं

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

२

॥सितायानि तमस्यार्तं पताकायकं तं कवा॥ अन्नाध्यादिषु व्याजो ह्यतिजयजयासूचानविवक्षुकं च दाद वासिनेषु कृपकं ॥ ध  
 नयिकालकं लस्याः ॥ एहाः पायाः ॥ हवद्विगं ॥ रुनी मदीगपठ ह तिमतादिषु कर्मयत् ॥ एहृदनायमनंत कर्मकात्री विचकलः ॥ त  
 यात्सुदृढं वलं निर्मलं जयवर्द्धनं ॥ गवाग्निनाभतिनी ॥ यचमूककं नीचनगं ॥ पाच्यदीवीदिर्गता चर्मकात्री प्रना वहिः ॥ सम्यक्  
 मववधं च कथात्सुयस्वनादयः ॥ तमद्विनिनादन रुवक्ष कं पलायनं ॥ नकाधरु नमू लीवाकदीवाली गली रुवा ॥ कदली कीदरीयक  
 चितिरुमचयययत ॥ समीगं मर्कटीयजं मर्दलयसमधगं ॥ कथाद्यययनादीं उ ह्यलसिनायलायत ॥ नागली गह ॥ गंधधवहिष्पा  
 नावतीति नः ॥ ह्येत्सप्रयेः ॥ साध स्वगाधं तेन लययत ॥ तं दृष्ट्वा धनली नयू नधमानं यतत्यती ॥ ॥ अथ स्वजं रुहाकतकी मरुकेन  
 जतालमूलमखस्तिनी ॥ खज्रवतनाल दृष्ट्वा खज्ररु रुये जायत ॥ एतानि धीनि मूलानि द्वाष्टिनाति घटेः ॥ पिवत् ॥ ग्रहनाडी ततः ॥ गच्छेत् ॥

10

७

विष् ४

जीवतवाधत ॥ नित्रीषमूलं पूष्याकं ग्राह्यं ॥ अथ रुलेः ॥ अर्द्धाहनावतयत् ॥ रुजू लेचार्धकीपिवत् ॥ यावद्विनाति तत्पीतं तत्र च कुर्वन् वा  
 धत ॥ तन्मूलं च गले वक्षस्व ज्ञेयं मानवाधत ॥ पूरवी पूष्या धर्ता सुतं वनाट उदय क्रियेत् ॥ तं वनाट केन यम्य रुलमधे विनिक्रियेत् ॥ तत्  
 लं मुखमधस्ते ॥ अर्द्धं रुकं नीयनी ॥ यमनवी समुद्रय गन पूरवी समन्वितं ॥ वकी याधमयत्तो नीनसख ज्ञेतां रुयेत् ॥ समूलयजसो रवी उ  
 विष्काका विष्कृयेत् ॥ तेलपकं ततः ॥ केला तनां गतिविमदयत् ॥ खजादिसर्वं गच्छात् ॥ रुवयुद्धति वा नली वज्रं हिमा उर्कताय को न सं  
 ममी मयजं वी नज उविः ॥ मफरवत्ततः ॥ पूतः ॥ वक्रवकस्य वीजाति क धमिना नि नाजिकी ॥ वध्ना वयववे वाच पिक्वतर्गना कर ॥ पूर्व  
 यत्तद्विर्तं गतं लघुमफरु ॥ यवेत् ॥ तद्विर्तं धा नयुद्धके ॥ अर्द्धं रुकं नीयनी ॥ सर्वं धामकथा गतं ॥ कुरुकं रुमयद्धि ॥ आयुधं सन्म  
 खं गच्छं समुहं चति वा नयत् ॥ ॥ हुं नृहं कुरुकं महानाकसु ने के मि गरु मरुत व न स न्यं रुं जत य न स न्यं रुं जत म हा स वी न् नृधा कप



15

10

की

३

यतिस्वाहा॥ सर्वथागतमननमकुलश्रुतं न सहजं जपसिद्धिः॥ अथ सा सच डिषधयः ४ डहयति मख ४ समत्या टथत् ॥ ॥ अ  
 थानिर्गुरुः॥ कुमार्य कालवकस्य नशा भव वसानितः॥ लिफ गवान न ४ रुत वरिर्म धनदकन ॥ जलकावाटली मूल सेवा लकसुर्म  
 समी मीक वसया पिष्ट लिफ गवान नदकन ॥ ॥ धेनुरुं जान सनेव सुवर्ग लेपमा वरुत ॥ अज्ञानवाणिम धेन उममान नदकति ॥ ॥  
 अथानिर्गुरुन टिका॥ वामपादं वामहस्तं क कला सस्य धूव वन ॥ संग कसिद्ध के वेष्टी वरिर्म हामरवमिक्त ॥ ॥ पादतल  
 धनामि संच वली ॥ उड्डा न पधनि माल्य भवेष्ट पात्रिरुपकी ॥ मीक वसया सा ध पिष्टा म दग्नि नाधयत ॥ तनपादय लेप  
 नलुभदं गन पवर्त ॥ रुंग नाट कदली कंद मीक वसया धयत ॥ म दग्नि नाहनी लपो त्या दया ४ पावक चयत ॥ गीलू न वरुत मसुल  
 जलोकमाहिलिफ हसु इत्य गते मठि ति जायते उवाच किं न लगी ते लाग्निः॥ ॥ अथानया कुरु ॥ दग्नी मोडत लीकार्थं गलमल्याः

७

वाधनेवयत ॥ खून मुख नदं गन कल चर्या निवलयत ॥ काष्ठ रान गत तापि अन्नया कान जायते ॥ ॥ अथ अन्न रुकली ॥ पिप्यलीम  
 निर्वर्ण ॥ चर्वे लोचन ४ यन ४ दीक गिन न नारुक्ता न वेकु द्धकन कविता ॥ ॥ अथ टह दाह रुक ॥ सकधा हिम वतमर्क जप्ता यत ताडि  
 तः॥ वक्रिः साभ्यति नोडा पि दकमा ना गृह सति ॥ ॥ केहि मा लीया रुनया ज्वमा श्रीवातामना कस ४ तस्य मूय पू नीमाया कृता गीत रुकया  
 मिस्वाहा ॥ ॥ अथ सकदिवा रुक दीति ॥ गित्री प्रम लमादाये न विवा न उध्वर्ग ॥ उदक वस मीय द्ध ललाट तिल कदत ॥ सकदि वातथ  
 सर्व कता बापि मय ॥ गृही लाय यन कथ काक जीया ऊठा ततः॥ तस्या सर्वा गल यन तफ दिवा जया रुवत ॥ रुंगी मूल लोचना अ पिष्टा पाणी  
 धलेयथत ॥ ललाट तिल क कला न कदिवा जया रुवत ॥ कमा नी सुवर्ण पिष्टा लिफ हसु कनो रुवत ॥ दीका क्षा ने रुक लाह मीक य को नदकति  
 ॥ आवाश ने व मधूक वसया लय कनो ॥ धनय रुफ लाह लु वाक्रि रुक रुत मरुमी ॥ ॥ तफ यत रुक रुत नु ॥ कामिनी कसुमा मिथी तनव

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







15

की

3

जितावना॥ नाओयलेकसंलयाधातप्रकाश  
 कंसूचिर्तिमध्याश्यालिहंकर्षक  
 तिकोम्यनापिनात्यलंतवृत्तेवेडविंनललेधृति॥ वेकीकत्यकिपहुतिर्नूध्वाधन्यानिर्गो  
 चडदना॥ हागिकहृकथनिर्त्यहुजीयाहमरुजन॥ एवमासयंकुयोत्तवककाथारुवन्नन॥ तस्यमूजपूनीधननाधैरुवजिका  
 ॥ वलीपालितनिम्काजीवेदुकादितजरी॥ एवतपालोनापचांगद्विर्तिमधुनासहाकेषिकंरुकरेनिर्त्यमासात्मत्यजनापहो  
 ॥ वक्रायजशतसिधाकषिकंरुकरेसदा॥ नवीनरुसनामयिषभासात्मत्यजिहवत॥ जीवेदुकायगियावद्विवाकाथारुवन्नन॥

10

7

॥ अथवीवीर्यसूक्त॥ कर्षालेगमलिकलायधसूखलवंधयत्ताधनयल्लटिदनाउवीर्यसूक्तनकनरुवता॥ जलादीगसमा  
 दायक्याष्टकडकानर्थताअथकमधुनासार्धमर्द्धपीलायदायथता॥ आत्मलिंगतनामयनतिकर्मसमाचनेता॥ अतिमार्धरुवत्या  
 एमर्द्धरुवतिनकुलता॥ केषमाजनिवालकुसंगहीनविचकल॥ धनयल्लटिदनाउवीर्यसूक्तनमर्द्धमी॥ कन्याकहितसूखलवंध  
 कटितट्टट्ट॥ एवतगुजरातनामर्द्धवीजसूक्तनमर्द्धमी॥ दहदकातमूलंतहनिडाकंकर्मनगीनोचतंसहदवीधरसूखलविचक  
 यत॥ लिंगताहायमामाचिनीजीवीस्तिनेरुवत॥ एवताककुलिकावरुदिव्यगुक्तनमदभायावकुलातिनीधायतावेनीयस्तिनरुवत  
 ॥ वृद्धवापुलिकामूलपूषानन॥ समुद्धनता॥ अथलेग्यगवने॥ प्रिष्ठाक्यादुरावटी॥ कयाष्टकोस्तितावकंवीर्यसूक्तनीनली  
 ॥ नकायामामर्द्धलीखशामवाभरिमलुयत॥ रोमधातसमूक्तकथावध्वाचवीर्यधका॥ ईशुतामय॥ सप॥ कष्ववर्द्धसमाहवता॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

उ

तस्यास्ति वा नथ कदा न वा वीर्यं नर्मवति ॥ तन्म कामाया वीर्यं सिद्धया गी उदाहृतं ॥ सह वीर्यमूलं उ तत्समं प्रमकन वीर्यं प्रियममका  
 अमयुको लपाना हो च वीर्यधका ॥ सुवर्णं तुलसी मूलं तद्विले ॥ सह कथं नानमधरति तना वीर्यं कर्षे के नय थक प थक ॥ यमयदा वि  
 मूलं उ उतमकायस्य मूलं उ तना लिंगे लपत नना वीर्यं नर्मवति ॥ जलमाटस्य क नीटस्य वीर्यं यथा समा हुनत ॥ अजा को वला सी पिष्ठा  
 उको य सर्व वीर्यधका ॥ कर्षु र्दं कर्षु र्दं मनि धूष्य न संमधु ॥ मर्दयित्वा लिपे कृतं लिङ्गं यो मीतं तं प्रन ॥ जले ॥ ये काले यत्लिङ्गं रुवदा  
 मयि ॥ धाविता ॥ वीर्यं ये स्मं रुय त्पूसां यो ममा र्धन संनय ॥ कश्च धरु लमूलं न पा न र्दं य व थ दिनी ॥ जिला ह व र्दितं व धा क द्या के वीर्यं क रु व  
 ता ॥ प्रपु पति ज लं पिष्ठा वान वी मूल लपि तां ॥ वरुि तां लिङ्ग नयति क न को न ता स्य दिनि ॥ सफा हं का ग सलिले रुवि तां क न रु वा नूली मूल ली ग  
 उा ह र्दितं विधिना क नाति न त ॥ साधक र्दं रु ॥ सिद्धं क रु र्दं रु लं रुमिल ता व र्दं मिश्रितं विधिना ॥ च न लं स्य ॥ ता न त लो क नाति न न व न र व ना ता

10

७

हं ॥ तीला ल्य लमि त र्प क ज क न न म धू ग क र्ना व लि फ न सु न ग वि नी की उ य ति द र लिं ॥ त ना हि वि व न ले न ॥ ॥ अथ व नी क न ल  
 रु पा ॥ रु ता न व र्द मूलं उ ज ल त सु रु प थ त ॥ वि रु त्या सै य ता म की ति ल को लो क व न्ध क त ॥ ॥ अथ ना ज व न्ध ॥ द त दा नू प नि  
 प ल व क रु ॥ य न्द ना रु र्दं रु जं ग क न य ॥ कौ क भे न म धू ना व ति म र्द ला धू प व प क त न प व न्ध ॥ कौ क मं व न्द न व न्ध ना च ना ग नि मि श्रितं  
 ॥ ग वी की न ल त ल क ना ज व न्ध क नी प र्द ॥ अ क व रु स्य मूलं उ रु रु मं कं स म्म द न ता ना ज दान रु व द न्ध ॥ रु रु व द्वा च वा द जि ता ॥ पू र्च रु रु  
 नि न क उ य म्म दं द ठि म वी ठ क ॥ क न व द्वा रु व द्वा ॥ य दि ना जा पू न न्द न ॥ अ ज ले पा र्द गृ ही त लु ना ग क न व न्द क ॥ क न व र्द रु व द्वा  
 था ना जा द धि वी प ति ॥ ॥ अथ सी व न्ध क न र्द ॥ की र्दि ग ल्प मा ल्प ना य न म र्द यित्वा वि ले प थ त ॥ पू गी रु लं य दा त र्द व न्ध मा म न ल नि  
 के ॥ ज ल का र्द वी ज न म र्द यित्वा य दा प थ त ॥ मी ह त रु व रु य या व जी र्द न सं न य ॥ क पि लिं गं स मा दा य म र्द य दा ल्प न त सा ॥ रु रु

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

१

नसहदातवी कामिनी जनभाहनी ॥ सनदीमेधनीरुतं हुत्वातच्छल्यमाह नत ॥ आत्मताथनदातवी कामिनी जनभाहनी ॥ ॥ यनप्रवि ॥  
 आत्मताथनसंघद्य दयात्यं चपैले ॥ सह ॥ चूर्णनसहदातवी वन्यमामनलोत्तिकी ॥ कपिपेरुतामवीजं मगतास्याथमद्वयत ॥ गुटिकाका  
 नथरुन दया इहमयाप्रित ॥ वनीरुवतिसामा ध्यानीनलधननचाया ॥ एवरीविहायामो नजीवतिसर्गय ॥ चटिकास्तेचचूर्णन  
 दयात्माहंत कुरुवत ॥ तन्मासिमात्मवीजनमद्वयित्वा यदापयत ॥ तन्मासिकं रुवद्वयं कामदं हर्षकायकं ॥ पूर्वो कमात्मताथनद्य प्रथित  
 कवर्जितं ॥ यथा पूर्वेषदातवी भाहनीमनलोत्तिकी ॥ तत्पुत्रचूर्णपोतन तत्पुत्राविकलाहवत ॥ कद्रुयनतन्मासि रुकथ ॥ ज्ञाद्यतंत ॥ काम  
 मदीपनंतस्य रुवद्वयनसंय ॥ तत्पुत्रमात्मवीजनमद्वयित्वा यदापयत ॥ खानवायदिवापानभाहनीमनलोत्तिकी ॥ ॥ अथदिहिरुगल्य  
 नतत्पुत्रप्रतिमद्वयत ॥ जतवाचनयासार्द्ध दयात्यं चपैले ॥ सह ॥ याप्रितावगमायाति साधकस्यतंसंय ॥ खंजीतस्ययं चंग मकधूपन

10

७

समयता श्रीजयन्तयनेले <sup>नता</sup> लोकवन्धमनुरुमं ॥ हानकाजस्यपिरुनस्ववीजं धरुवीजकं ॥ मद्वयित्वा यदातवी चूर्णनवगकुरुवत ॥ पाना  
 वतस्यद्वयं सुवकं नाचनंतथा ॥ जिहामलसमायकं श्रीजनं श्रीवगं रुवत ॥ सनदस्यवामनं मधुतिलनचा जयत ॥ यथयतिनाना  
 मां तत्कलासावगं रुवत ॥ तस्येवदक्किणं नयं सोवीनमधुनासह ॥ श्रीजिताकस्यसावन्धाय श्रीरूपातिगर्चित ॥ एतोकं नवतीतं च श्रीज  
 वकं नमिप्रितं ॥ श्रीजयन्तयेयगं लं नामावन्धकं नयनं ॥ मत ॥ ललायियं पुंच नोगकस्यनलाचनं ॥ श्रीजिताकाननानामां दक्ष ॥ माहयं निध  
 वी ॥ विंशकनकवीजाति भाउ ॥ एतयवसुथा ॥ एतदुक्तं नवदकं च पिच्छं पुं कृतं लाउयत ॥ ललाटतिलकं कलावणी कृप्याहिलो रुमां ॥ कं  
 टकं मधुश्च वीच नाचनचितिरुमच ॥ काकजिहामसमं कोटं तिलकं श्रीवगं रुवत ॥ यथायथा कसं प्राकं रुवन्धाय वदुलंतथा ॥ एतस्वीवकिण  
 खायां हस्यपुं तथेवच ॥ मूलमूलं समुद्रस्य कश्चुमहस्यचक्रमात् ॥ पिच्छाकर्षेयसंयकं कं कर्मनाचनंतसमं ॥ तिलकं श्रीवगं मातियनिहा

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



क्रादन्मती॥४॥वद्वान्निकामूलं पृथुतन॥समृद्धवत्॥कद्रुवयेतवाकोने विष्कात (का लकी कर्त॥चन्दनतसमायुक्तं तिलकं  
 श्रीवर्णनय॥कनकिकानि नमुल्य (यना को स्य ये मूल के। मंजिषाखानयानच दहं यामी वर्णनय॥नकं मूर्ध्वयूरीषं च यवला  
 नयनामूलं। मिथी कश्यपदातवी रुक्मपातवर्णक र्ण॥गिलातमालमर्धय कं कर्म नाचतामपि। दृष्टात हिल कं कला। लिफद  
 ह३धवाजन॥नयना नीलपाताता निर्यथमास्य दं हवत्। सद्यश्च कलिकामीन पिह नाचनयामपि॥वामहस्त कतिष्ठा फ हिलकस्य  
 कण हवत्। विश्वाका ना (धतगिनि कर्षिकामा कर्णजग॥सहस्रलनदवाग्ध नाचता नीजता विना। पृथयिला कर्षिके या तनयं तिलक  
 कर्ण॥वर्णक नातिनिखिलं जगन्नास्य धर्म गय॥तमाल पञ्चाजनय प्रचन्दनं। विर्यगुही नाचनया समी गके॥कर्ता जने नाजितला  
 वन॥प्रमान् यमी कथतं कृत्स्नवर्णजेन॥लाकागाने जिता वासा वरुण॥४॥कनामंजा। हावितं। पृथयिला थ। तनक वीत वरुणी। सीमा

को

८

कतछर्चयवि चूर्णं गर्हयव रुला। वनाहस्त ह हनिह दीयया जति धायता॥पद्माल्य कज्जुलतस्मा। रुही लाह नयानय॥श्रुजिताका  
 रुवहस्य सकलास्य चर्णमि य॥सपिथय ववा कर्षं सूक्ष्मे ला नाग कर्ण॥समर्जनस सिद्धार्थे धूपे॥सवार्थे सिद्धि द॥जग मां सी रुं ग  
 नाज मखे कर्षं यूपी न के॥लाका कश्म गयुस्य क्का र्णधय (ये समी गके॥धूप॥सुगन्धना मा सो मानना नाचसानि रु॥वर्णक नाति वि ला  
 क मिते पू चं यदा दत॥कष्ये नम धुरुलात गुक्सी लिफ साधना॥याही नर्म निह दय नासा तिष्ठ नि सक्त॥ ॥अथ प्रतिबन्धक मर्ण  
 ॥मालतीयस्य सूर्य कं कद्रुतलं स्या विर्ण। जतल्ले फरुणामा नती मा हयत पति॥खंजरी तस्य मां सी उ मधना सह प्रथय ता श्रुत नयानि  
 लपन यति द्वा सा रुवह्यली॥क र्षं नदवदा र्चवस को र्ध पू चं वरुली। से नवन तिला रावां सफ वा नीध न॥यन॥तलिष्ठा लपे थ याति नती  
 दास॥यति रुवत्॥पीवा र्ज दा ठि म पिष्ठा। धत सर्वय सूर्य ता नि लय पति द्वा र्क नाथ पि सु इ रुं गी॥नाचत मस्य पि रुं च दृष्टा उति लकी



15

10

की

रु

कृतं चामहर्ककनिष्ठायां प्रति दशानसंज्ञाय ॥ स्वयाने स उ काल उ भावतीति ॥ कि पत्न ॥ सु पृथ्व हा वय ह न तिल की प्रति व ग्य कृत ॥ सु  
 ध्वता कीट कार्य ध्व मूलैय गि न कर्त्त का ता व ल न य दा त वी दा स व क न न प र्ति ॥ समूल च र्त्त रु धा पी व क व धा ति धा य थ न ॥ स्वयाने स उ  
 काल उ विदिता के समूह न ॥ न व नी त न ति कि र्त्त च र्त्त या य थ च र्त्त ता त च र्त्त हा ज य द र्त्त य ति द श ह व ह य ली ॥ ॥ अथ ग ज व य ॥  
 उ ह ना य सि मा दा य था त न व ल व न क ॥ य थ ग ह क र्त्त व धा ग ज व य क र्त्त न ली ॥ अ काल त ल र्त्त मि र्त्त क य र्त्त इ डा क च र्त्त की ॥ अ न त स  
 र मा य ल म हा ह सी व ल रु व त ॥ ॥ अथ वा जी क र्त्त ॥ स्व न स न रु वि र्त्त धा पी च र्त्त मि ता अ म धू मि थि र्त्त क ला उ पी य इ र्त्त न रु य ति जी न  
 त ना पि ॥ ग म क र्त्त क र्त्त मू ली वा न नी ता ग व ला ति व ला या च र्त्त मि र्त्त य स ति थ र्त्त य स ग ह य म दा ग त म मि ॥ य व क ल म मा व र्त्त रु  
 ल्य ग म धू म मा ग धि स हि र्त्त श या लि क र्त्त य त प र्त्त रु क्ता की र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त ॥ य त म धू स र्त्त वा वि र्त्त स न ज किं ज ल्क लि फ ना रु वी य म मा त स न

0

30

रु य ति म न ग त ना धि न म ली ता ॥ वी र्त्त क र्त्त क र्त्त धा र्त्त क र्त्त न ल क र्त्त ॥ नि प्री य य स वा जी न व स्या इ र्त्त य न ती ॥ वि य ली ल व ल  
 य ता क र्त्त ली की न स र्त्त र्त्त सा धि ना रु क र्त्त र्त्त स ग क र्त्त य म दा ग र्त्त ॥ मा क क र्त्त रु ल उ र्त्त स र्त्त र्त्त म धू ना स र्त्त ली र्त्त नि प्री य इ र्त्त य  
 प्र ति व ति म ल्क ता ॥ य थ र्त्त र्त्त वि वि दा पि ग म क र्त्त वा वा हि मा र्त्त र्त्त ता व वा च ॥ य फा रु ल च म ल क र्त्त र्त्त ली नि य र्त्त म त उ स र्त्त क  
 ना नि र्त्त ॥ नि क र्त्त य दि न म र्त्त म धू ना च ल र्त्त वा वा पि र्त्त की न य र्त्त च र्त्त र्त्त मा सा र्त्त म र्त्त स ह य था पि र्त्त दि न दि न र्त्त ग र्त्त र्त्त र्त्त रु व त ॥  
 य र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त व द नी चि र्त्त क र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त  
 ति ल र्त्त र्त्त लो ह पा र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त  
 वि र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







15

की

27

तोयनमर्थं धर्तार्यमचकुरुः। तज्जालीवधयचकुरुः यतयामचययचत॥ ततर्कगाल्मलीधोवेर्मर्दथदिवसचय॥ तिक्रिपकाचकथा  
 ततर्वाल्कायचकयचत॥ तिक्रिपकाचकथा। ततर्कगाल्मलीधोवेर्मर्दथदिवसचय॥ तिक्रिपकाचकथा। ततर्कगाल्मलीधोवेर्मर्दथदिवसचय॥  
 इयमदनयक॥ मृगलीससिताकीनेऽपलेकं पाययचत॥ कामिनीनां सहायकं कारुथानिमिषाकेने॥ छुद्रमृगयथाहाग॥ हागोकेतसे  
 चूर्णकां कलापिकं निरुद्धाथनरुकां दधनयन॥ मरुफेयापितयायादिनेकं कनिषाग्निना। एवसकदिनेनेयाकन्दकन्ददिनेदिने॥  
 छुद्रवधयचकुरुः छुद्रयउ गुलिपन॥ इयसं वृकमांसिक्का। गनकगत॥ प्रयत॥ दाहायां चयहवाथ। एववकं पन॥ पन॥ छुद्रयागज  
 पिप्यत्या॥ कदल्याकाकिलारवके॥ गमकीनीवाननीमूलजातिमूलस्यचन्द्रवे॥ पाययचकयचत॥ उलायीअदितयय॥ तत॥ कीनसि  
 तायकं तद्वल्ययादितावधि। छुद्रमृगलीका। धेर्मर्थयामचकुरुः॥ वस॥ पूरुन्दनामायवादन्माप्रसितायत॥ गमकीनीवाननीवीज

10

1

छुद्रवीगजपिप्यली॥ काकिलारवस्यवीजातिमज्जाकार्यासवीजया। गतावनीचनीहाया॥ रुलीसर्वसमंरुवत॥ सचकल्यासितायाका  
 मधनालीलिहिलिहंत॥ यकार्जमनयातस्यातत॥ यगवापय॥ कामिनीनां सहायकं नमथकामधववत॥ वाननीकाकिलारवस्यवी  
 जातिनिलमाषके॥ वासागमकनयामूलसंवेचूर्णसमंरुवत॥ चूर्णउल्लमर्तवाचसर्वउल्लायनकर्त्रो। एतकमगवांकीने॥ ययका  
 मांगनायक॥ तलेनयकवरकेखादन्पूर्वचहाजनात॥ हाजनेकपिवलीनीनामालां नमथचूर्त॥ पूननवानागवतावाजिगंधागता  
 वनी॥ गमकनमृगलीकन्दमर्तसुतंसमंसमी॥ चूर्णमध्याकस्यकं तिकेडकापिप्यत्यय॥ तपुलवाननीवीजं चूर्णयतसितयासमं  
 ॥ आलाउयऊवांकीने॥ तनपायादधूयका। तद्वल्येहकथयान्नममथकामिनीकली॥ वाननीवीजं चूर्णउल्लयंजमाप्रचूर्णकीनापि  
 कलादकेहावांयातचययचकुरुः॥ तिनिलस्यमहमंडविमग्रयत्। पिवलीनीसितायकं नामालां नमथचूर्त॥ वालुकासुव

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







स्युता पीताम्रममथगृहा कृष्णमदनोदका ॥ धनयिया धनत्रताचमालचदण्डगुली दत्तकथाविधगुल विडिलीकानमयहपि  
 यः ॥ ॥ गीरिनीयथा ॥ हीनगी दीर्घकंठी च स्मितवाक्कविशमवदा मधमासुनतनी यतस्मिहयता ल्यरुक् ॥ यतिधियासुनताइस  
 मत्तममदिना ॥ विस्थात हीनकण्ठं च इर्जनीमदनोदकी ॥ कृष्णगुलायसुका गीरिनीयानि कीर्तिता ॥ जवेविध कृचिमात्र ॥ स्कांयत  
 चसदायिय ॥ ॥ यमिनीयथा ॥ यमगंधासुवदना कथालामन्य गतन ॥ यउरुलयसुका यमिनीयानि कीर्तिता ॥ यमगान्धिवद  
 नासुका लामन्य गतन ॥ यउरुलयसुका ॥ दानधर्मविनता कतय्या यमिनीविधिरुषवेला नां ॥ गुडवक्रयियाधीनाम्रका रुचलरु  
 मिता ॥ यमपूष्ययियायमा मधुना हावनातिनी ॥ वक्तिनसऊनसहा सर्वसुखमालिता ॥ ततोदिगुलसम्यन्न ॥ पांचाल ॥ यमिनी लह  
 ता ॥ ॥ जतासुच उविधसुनायकासुधु सो कथ्यला ना रुददकादिनायका ॥ केमलनति कयः ॥ अन्यथा नतिवम्या पुरु ॥ ॥ उकाहि ॥

की३

७३

विजातिसंथागवत्तद्विषमवनीतिरुचि ॥ हस्तिनीगुलसम्यन्ना रुडा ॥ सोयूरुष ॥ स्मृत ॥ सतदासमनयथ ॥ हस्तिन्या नतिमाचनत ॥ विडि  
 लीष्वर्मयन्ना दत्तजातिसुत ॥ प्रमान ॥ समरुहागसिद्धार्थ विडिलीदत्तम्रा अथत ॥ गीरिनी गुलसम्यन्न ॥ कृचिमात्रानन ॥ स्मृत ॥ शीस्त्रवाहि  
 यामनतथ ॥ गीरिनीयानि नतिमाचनत ॥ यमिनी गुलसम्यन्न ॥ पांचालानायक ॥ स्मृत ॥ सर्वज्ञानसिद्धार्थ सतस्या नतिमाचनत ॥ ॥ अथ  
 दानीनतिकेचनमता नसावले सर्वजातिसाक्षयली चन्द्रकला ॥ नित्ययनीयक ॥ मरुदुष्यदयुक्तजातजयनता सोमवेककलकककी  
 ० कपालदत्तवदन नजालकमूर्धनि ॥ गुकाष्टकविहागतामगदशमर्मगवतीरुक्ति नृध्वामागमनवा मयदत ॥ यरुदयलकथत ॥  
 ॥ ॥ अथास्या ॥ दकिणपार्श्व गुहमानय कालिनस ॥ उकपंचदण्डां नष्टोर्ध्वमासीययत्तं केमलनाहयति ॥ कषुप्रतिप्रदामा नयवे  
 मरुताममरुकोदुष्टययत्तं केमलवनाहति ॥ ॥ गमालिकापूजमतप्रविणो ॥ शिला ॥ मूर्धनिरुक्तवामदकिणकेनवकासहानुदय



28

[illegible]



15

को

75

नीहृदि स्थितमिहिकास्त्रिया ॥ अहो देव्यपनिमाना वनिमगा ॥ ॥ उच्च वयनी च द्रव्यं यथा ॥ मगी वर्यं वरुवा हयमूच्च द्रव्यं यत ॥ नीच द्रव्यं तथामूच्च ॥ अतीव महा धर्मा तत्तुक्त यती स चर्षा सुख क नत्वा विष्णु घात ॥ कर्षा चित्त धर्मा धर्म हा वा तय क ॥ तिथा र्णा का साय ति न हर्ष ॥ सुय कि क समाहिता ॥ क हत न यती को या द न्तर्लक्ष विमर्द नाता न डे वीति न ह्यति या विता नीच महता ॥ तत्वे व म सु नीच महता ॥ ॥ उच्च महता उ ह्य कि र्हा वना क धर्म धर्म न नी ॥ इ च विमर्द इ यु क्ता के ॥ सु पीठा साय अ ह दि ॥ त ड व क्ति त च र्ति म त रु वा हि न म य ॥ ॥ अ धर्म धर्मा धर्म न ति र्हा वन त रु द्धं चार्थ ॥ तिथि ॥ सु वत साम्यं म पाद यत ॥ ॥ उ क्ति ॥ न ति त न ॥ ॥ य स क न ति वे ध म य न वि प्र य यु क्ता ॥ न म ता वि वि धे वि वि ह मा ना ह लो समा ॥ य ति ॥ ॥ अ न नी समे त ता प्र था गि न या व धा ति नू य के ॥ त च सम न त य वि उ म ला दि रु द्धं न व क्ता य का ना ॥ ॥ उ क्ति ॥ समा र्थ य ति ॥ वि व उ म ल च क वे ध के ॥ ली व के च क पा द य ॥ वि नू के मा क र्ति त था ॥ मा जी न

10

7

सो न क चैव ग ह ह ह ह क क थामा गै व व रु व ध च सु क्ति के य न म व च ॥ क क र्ति ह म व ध च व ली व ध च स र्व के ॥ क म म त्सा य र्थे व का ला व धे क ला य ह ॥ दि व र्ध च वि उ र्ध र्ग र्व म ग ल म व च ॥ ता ति क म क ल ॥ वि व प ल्प र्वा ना ग क र्ण र्ण ॥ स य नी वि य र्थे व क क र्ति वि य र्थे त था घ टि ता घ टि र्थे व म य र्ण गं र्ज त था ॥ क म ल व न ल ॥ वि य र्थे म र्ज त था ॥ क र्क चै व नू र्ध च ला ति र्वा न्ति त था ॥ ॥ ध र्ज पा ना व र्ध चै व वि क र्म वि उ र्ध क था ॥ क उ ली वा ल व ध च ति र्थ र्ध म धे म र्वा ॥ स र्व ता मू र्व व ध च क र्क र्ण र्ण व ध र्ज ॥ क पा ल र्ध व र्ध चै व त थै र्वा ग ति पी ठ र्ण ॥ ध र्ज व र्ध वि चि र्ध च दि व ली व ध म व च ॥ म न्म थ वि य र्ध च ती र्ण मू र्ज न म व च ॥ म य क नी च व ध च य र्म म्मा वि य म त ॥ प र्ण च ल ह न ल व ध च र्ण क न वि य म व च ॥ उ न ग ना ह र्ध चै व वी न व ध र्ध वि ना ल नी ॥ वि र्ध वि य र्ध व ध च त था स र्व र्ध म र्ध के ॥ गो नी वि य र्ध क न्म य हा स्य म र्ज न म व च ॥ ती वी ति वा न ल वि र्ध उ क र्ध व न म व च ॥ उ था न क च वी रु र्ध व ध ना म म त ॥ प र्ण

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







15

को

20

कृत्वा जीवति अजा कीचल पथयत। मासम् चरुयन्ति गंगु ठुठु समं रुवत॥ धरु नयससं मिषि ह्यग न्नाम लुमिषिती  
 महिषी नवती तं गजवीजं ह मरु लमेष्य॥ पथयितं कुरु लिंगं ह्यलिंगमिवालेपम् मदिनं मदिनं मिथलिंगं स्यात्क्रामयत  
 गरु॥ दाडिमी रुतवल्कला नित रुत्नात कव हती कारु लेऽप कौ। सपथते लं कुरु न ध्वज वद्धि मदिता वरुण॥ अजाम्बुल मेषि  
 सधाम कटिका जटा कुर्यान्नि हायमी लिंगं ति नत विलेपनात्॥ पात्रे नमिष्य कुरु तं नय कीटका निका॥ अश्वगंधा तिल कोप से  
 वीज्वत सपथा॥ अयामा ग्नीय वामा वा॥ पिष्य तीच समं क लेऽपिष्ठा विमदय रुनं लिंगं मासम हनिता॥ वरु के ह रुमा जं उ सु  
 लन मूल लायमी॥ वना हव सया कोटि लिंगं मासं क लेपयत॥ अति दीर्घ दूरं सु ली जायत नो वरुणाय॥ अश्वगन्ध वचा क  
 र्वं व हती च न ता व नी। पाचय हिले तं तं नमदय रुन पू च्छेत्ति॥ लिंगं सु ली दूर दीर्घ मासमा ज्ञा त्यजा यत। जं वृक्ष क न

10

0

तैलं च महा वा जी चटं कर्ण॥ मधूना सह ले पायं यमा सा न्ति गस्य वद्धि कता॥ मिषि तं मूल तीच च मदि स्थिता यसा नय नाश  
 त्मलिंगं तता मय गज कर्म समा चरुत॥ अति मा जं रु वं यो मदिनी वात तने कलात॥ ॥ धन न पि लिंग वद्धि क नला नीलि  
 स्यात्॥ मिषि तं मूल तीच च माहिषे नवे तीत के शत रु छ रु धा त्य ना ली रु तं से फे दिनी पे चत॥ तनय लय यन्ति ग वरु त ना ज स गाय॥  
 पिष्य तीम नि यं की र्ण सिता उ ल्य विम दय त से वं व द्धि के नी ले ग ना ज का य वि वा यला॥ माहिषे गे च र्ण उ ल्य से वा ले च समं स मो अत न ल  
 ययन्ति ग सु ल म्या मास मा ज त॥ अश्वे ग म्मा अयामा ग्नी वा च य ती ल ला॥ सपथ य व रु ले त न अजा कीचल पथयत॥ तत्ता ले ग न मा  
 से कं मदि ना द्धि मा प्र या त॥ मा मिष क प लं कुरु अश्व गंधा गता व नी तै ले त य क ले पायं मासा न्ति गस्य वद्धि कता॥ नाहि तं मस्य पि रु व ज  
 लोक तिल जी समी अत न मे दय न्ति गं त ता सा न्मूल लायमी॥ सिता सि ला श्व गंध य पात्रे नम दय त्समी अत न मे दय न्ति गं या तिक रु तं

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

२८

वध  
 कथा॥ वधोत्सवमाजल नाउकार्यविधानम्॥ गृहगणधर्मादि जिज्ञासुनायसमसमी॥ विमर्शतामयाउचदिसफाहंयूनप्रधत  
 ॥ तिलतेतनतलेलीमर्दनाद्धर्नरुवत॥ लिंगरुतनचकलेचहुरुपायेनसंगय॥ ॥ धजलपा॥ अकृदियवधूकेरुनलिंगायनमे  
 किरुनतदुदयमहिल्या॥ तानववर्गमीधेकोलमृतिरुमूमगलिलेमधुयतलीजिनीरुलभेष्यायदहिमे॥ कियताविदग्धमततकतक  
 रुलोमिष्टितालेप॥ य॥ कनातिलिंगलेपंकनलसेन्यवमधुरि॥ हवितालीजनयायदमागीधिकाकषसेन्यवमधुरि॥ कलेनवप्र  
 नीषमिष्टं लिंगलेपंकनामितवतितानी॥ ॥ अथप्रावर्णी॥ अकर्मलसकपूरं हविद्रामदनेमधुमिषपिहृतलधाइयं लिंगकीका  
 वलीहवत॥ जेवालेपूर्यंकपूरं मीठीपूर्यंचधविती॥ लिंगलेपवर्गनामाध्वीतिवतिसंगम॥ ॥ अथकचन्दनास्त्रधा लिंगायत्युवविरु  
 लीकीडगेधकलेपनलिलायकनतहुरुली॥ गणिठकनपिप्यत्यासूनलमदनीपली॥ जातीकसमयजालिमिडिडा॥ अथसमयप्रा॥ अथप्रा

10

७

लन्धियालिफतथास्त्रीप्राववस्थकता॥ जलतलीगलीकीदपिष्ठाहुरुलपयत॥ हस्तस्त्रीकुनस्य॥ अथव्यग्नेधनीयथा॥ सनटिक०  
 एकध्वन्यकतिनिठिका॥ रुलीमधुकेनकामीचसदाधनसजासिवा॥ म॥ अथलोग्नवसेनेकोमूर्च्छित॥ यायदाइपिवा॥ कध्वनमिलि  
 नावाधमधुप्राधनजायत॥ अथवाधनजावाधमधुचिवागुठेनथा॥ जावरीतिसिथालेपायातिम॥ धधअइथवा॥ मधुचिवाहुरुलापे  
 यत॥ अथवायदटिकले॥ लिफलिगुवसुधार्मीकनातिमदवाहिती॥ कपिलिगगतीकसिनदरुमाअध्वीतिता॥ ॥ अथप्रातितीकोच  
 नी॥ तक्रलस्यगिनीचिह्नलामुकिगरुइवीरुली॥ अथप्रातिनीनलुजिकायववानिल॥ सदातयनमाअलथानिसीकाचनीहवत॥  
 सनालातिचपमतिनीनलाअतपप्रयतादणवानयस्तगाचकन्यासाजायतयून॥ वतसान्मलेमादायतलवखवादिनीसमीधप्रेय  
 कीततायनपीलासकावतहरी॥ काकिलोरुस्यवीजानिनीचकलवीडनी॥ काथयल्लेपयहूनथानिकात्यांत॥ यून॥ जले॥ कथास

२८११

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35











27

ना॥ॐ॥ शुक्र पुत्र रुकावरुणिकापिमृकाजायत॥ ॥ अथ प्रमनागकवर्ण॥ चतुर्ध्वजतनाथनलाकीपिष्ठातद्वीव  
मुपतंगतपलेप्रार्थमदग्निनायवत॥ मद्रग्निनायारुणार्जुनायचसमद्वेषाक्रियत्पुलंयंचवूर्णसांकेटिकललाधक॥ किंचि  
रुच्चारुत॥ गीतकाचक्रयंसुनकथते॥ वर्षापलासुननेवलोठयित्वासूतापिन॥ मधुलूनलमध्वकलेलासमद्वेषत॥ जा  
यतप्रमनागलिद्विधाश्रानिम्यानिवे॥ ॥ सुगन्धिमालेनिमालिनीली॥ मंजिष्ठायाः कषांथनयषथत्युर्व्ववर्जुत॥ पथनेद  
ग्निनातना॥ श्रवतायंसुनकथत॥ वर्षापलासुननेवसिक्तायचासुपुर्व्ववत॥ नीलममलमालिकंसदृशाकुरुवकिंदि॥ ॥  
अथ॥ चतुर्ध्वजतना॥ नीलचूर्णपलेकेसुपुर्व्वकथंउतद्वीव॥ तद्वीवद्विपलंचूर्णकिष्कासर्व्वविलोउथत॥ सिकावर्षापलासुनपुर्व्वव  
ग्निनायवत॥ चतुर्ध्वजतनायवजायतनावर्षायाः सम्यगरुदलेनेवमध्वमाहुलितर्जुनि॥ पथयित्वातनायकाहुलिकातापथक  
॥ ॥ चतुर्ध्वज॥ ॥



२२

[illegible]



38

भाजं च कर्षुने क्रिस्तातस्मिन्वधप्रथत। शुक्लस्य वंशनालस्य सुलस्याननवादनं॥ लघुमं सुलमातनकाया शुक्लचकानयत॥ हिलाथ  
कदलीपुष्पं तनियसितेनयनयत॥ वंशनालपुतवर्कं रवुं नृधावतमसुखी। आतधजिदिनं (लो) व्यारुगहृतिखनरुत॥ जिसके हातम  
ऊरु (लो) मयित्वा तमाह नत॥ कर्षुने तस्य गुरुं नृकं कं पूनरुजना। कर्षुने जायतने तं यथा वीजनं संप्रय॥ ॥ अथ कर्षुने कर्षुने  
॥ तानि कलकपालवाद्यं देवार्तिवकाशकं। यत्किंचिच्छुद्धकाशं वा तथतसुधप्रयत॥ दत्तात्रयजतीयाथ तस्मिन्मध्यकप्रयत। त  
तस्मिन्नेव वटिका कलास्य ४ कं कर्षुने प्रमा॥ ॥ अथ कर्षुनी कर्षुनी॥ आखचर्मद्वये काशं जयामुखावठं नरवी। यं वधूति समायेकं  
सयं ४ कर्षुनिका रुवत॥ पूष्यानि वक्त्रलाभ्यव न कमा लासं मं समं। तच्चूर्णमिदं दुष्य कतकालस्य वादनं॥ क्रिस्तातस्य मुखं नृधातम  
ऊमिमदायुतं यदुहृत्ताग्निना तावत्। यो वल्की ठान दक्षत॥ तावन्ति तस्य पूष्यानि मुखी क्रिस्तादवपेधत। कर्षुनी च मयति लोमं मुखं कर्षुनी







15

10

5

0

सकाहाहसमद्यय हिं दु लं स्यात्तमता न॥ हनिपाजानिहस्रच्छा पावकडव संयुत ॥ बालकाग्ने सुतिदग्ने गधाम्मा हिं दु लं ह  
 वत ॥ ॥ सिद्ध न वचना ॥ चिंचालगमस्यार्थां गं फुतनागं वितिकिपन् । पावथलो हयाजड लाहव्यातिमदयत ॥ चउं  
 गितनादिने कंड सिद्ध न जायत गुहं । न कर्गरी न्यपां मार्ग कडस्य ड रुसकी ॥ चउं नं ग वतना गदत्तास्य यदि न दये ॥ पाव  
 वलाहयाजड सिद्ध न जायत गुहं ॥ पलानी विंगति नार्ग पावथलो हयाजड न । वाजिका रुस्यार्थां गं तडवे वितिकिपन् ॥  
 पीतवर्ण रुवं पावला वत पथा तपचा लयत । ततः सुगीत लं कला ऊ लं ता कालयत्यने ॥ पलमाजावधि कलावोसा  
 रुस्यार्थानि कियत । कांशां क सिमोदाय मेहा ॥ छुं नितं कियत ॥ किं ला नूदा पव चूत्या निवर्त नीव वक्रिता ॥ छिं ड  
 कला हां उ च के गला कां ला हजा कियत ॥ नकवर्ण नदा तस्मा हे । वत्पथापनि कियत ॥ सिद्ध न जायत दिवा सिद्धयागड

की

२३

नक्त ॥ दृढ कं रुस्यमद्यस्कं कालानि यामि मिथी । वक्रिकाले मर्तनागं सिद्ध न स्यात्तमता हनी ॥ ॥ हनिपाजानि  
 सिद्ध न यकवर्ण ॥ हनिपति स्तव कला ती पिष्ठा वा निष्ठा सह । दृढ ति धायतां वरु सम्य दूतिषी उय हत ॥ अग्निना ह  
 ति नं द्या टं क नं पंचविज के ॥ तस्यापुल्लयमाहाय भकं जं वी न जं वरी । सीययित्ता पुन शय सु पिष्ठा पया टिका कति ॥ ॥  
 ययित्ता तं रुं उ तो लं लिफ वरपय न । रु क्का नं लय था तस्यां सीक भय थ दू पयत ॥ तद्वर्ण नं सिद्ध न वरु कल यन न  
 चा ॥ ॥ सिद्ध वल वल कवर्ण ॥ मजिष्ठाया पलं प्रा र्कं कलं स्य पलं तथा ॥ अउ स्ये वी विकस्या पि छे थ के उय ल ड की ॥ का  
 लय ल वल स्या पि छे थ के उय पाय की । तत का री वा नि ला न जो सु चो थि नानि पावथत ॥ ततः य हा तं तला री र्ग व थ पाद रु  
 वित ॥ पक दा डि म मी जा रुं । सै न व ल वल रु व ॥ न व रु उय ल गतं सम ड ल वली के थत ॥ नि कंड सुत र्ग पो थ किं ला वरुं

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

10

5

0

मितापयत॥ द्वितीयांशमात्रं किंपरुस्मितं लोकनायकं॥ यदिचकारुवरुद्रुदावक्रिनिवाययत॥ चरुवलीतलं प्राकीर्ति  
 धूर्तलवलीरुवत॥ ॥ अथ हिंसेतिमार्गः॥ हिंसेनामत्रमकेकं लवतं ॥ तिवलीजैमासचूर्णय  
 कर्षी॥ सर्वमहाकीर्णयययत॥ तत्सर्ववैधमजारमायमेवमगरुति॥ यकजयं धान्यनालोकिधेद्विगुवु  
 वत॥ खर्तनीकाकतिपासिं समुद्रलवलीतथो॥ तज्जलचलीकं कृत्यं मयकीर्णयययत॥ अथपिठस्यपादीनं छुण्डयमग  
 र्ति॥ तत्सर्वं धूर्तपिठं च लवलीदिवलीयय॥ नीत्वायकजान्यनालो हिंसेयाकृष्टहिंसेवत॥ यलेकं कं गुणं पृथिवीदिवलीक  
 युक्तली॥ जनीठवीजं मजाच॥ उषवर्जयलद्वयी॥ निसृज्यातयलद्वन्द्वमंकीकृत्ययययत॥ जिवर्तहिंसेतन्मध्यं किंज्ञातयन  
 लाडयत॥ तत्सर्वं धूर्तवैधिद्वान् सुफाहाद्विगुतावजत॥ द्विपलं छुडसिं गुल्या॥ द्विधकीर्णवेतिं गति॥ गेधममाययान्धैर्कृत्य

को

20

कंठचडपली॥ अलीवृषाधमध्वस्तं तत्सर्वं ला॥ लिंकिपता॥ कायागुर्कं रुवद्याव॥ द्विगुण्येवकृष्टं रुवत॥ ॥ वीगकनर्णडा  
 धरुनवीजचूर्णं रुसृज्जीर्णकावयत॥ धर्मधर्मपूतर्तुर्वि॥ जववायजिसफध॥ तहागंधतनागस्येदगमांसं नदाययत  
 ॥ रोलयत॥ मृकपथाम्भे॥ तद्वर्गजायतेष्टु॥ रुजयजनीचूर्णं॥ वकइ॥ चनसफध॥ तहायदगमांसं॥ जत॥ नृणां गते  
 याजयत॥ तद्दोल्यादिरुलाका॥ धपूतसुद्रचपाचयत॥ रं कर्णं तननां॥ यावत॥ तहासर्वं नमूदके॥ जतिर्वचपूतर्तुर्वि॥ नमू  
 र्वं वगताजुत॥ ॥ अथगी॥ नलोयकान॥ धधपलीदवदान् चननवागत्रुमी॥ पलानां विंशतिं॥ चयं कृत्यध्वं  
 दग॥ यलपंचेकसम्मानसितयाचसूगीप्रहि॥ नीरारुले॥ निषिष्टे॥ मिश्रितसितवात्रिलि॥ तानिरुष्टानि॥ निषिष्टयदया  
 यरुमातया॥ दगवांसनययं॥ दिवसेद्वितयास्त॥ गथायनं॥ लेलजयि॥ रुजमीसीतस्वीमपि॥ धधपलं॥ पंचपलं॥ पीताममनमे

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

हिका॥ कादवयववहानि दयस्ततजराजने॥ निरिष्यतानिसर्वालिर्गंधवजवासा॥ पूर्वप्राजादितिकाथ कल्याणक  
 यततशाक्यायवगयलातिनयतय्यथाकुवि। कृषिकायाश्रममखाभपिकृष्यादिरतथा॥ तत्कृषिकस्ययवंगप्रेयाभिन्वि  
 यकार्यने। निखातकासजितयस्यापनिष्ठापितचत॥ कृषिदद्यायथात मूरवतसुखितंवि। नदधकासांदिताह्या  
 जीयायवनिर्त॥ लापयतकृषिकस्यांनिमगताहिलेवत। कलनका। लयंकुमिभिकृष्यात्कृषिकापनि॥ कृषिकाकव  
 सुजानसुदित्वाधमहानसे। रुवयदालानिनदंनथा कृषींस्वयेयी॥ श्रवतायतदंनका नयासहकासर्वठकाना। यकंगलित  
 गंधनलोहपाजंजलेहिमे॥ क्रिष्णायाजोहिमेदत्ता। श्रातययप्रितंजली। श्रपाथ्यकडनावादान्। सीनोगमसुवाविता॥ यकालयसु  
 ययदीययसाकालयहृथा। तदयमाग्यतंगंधउदनेदन्यराजने॥ तंगंधवाचयत्तुश्रवासांवासयतुत॥ तकालकसुमेनिरे

२८

10

७

गैन्धयथाकडरुमशा। वववप्रिजिधय४सतस्त्रीयाधूयात्तवी॥ ॥ सकर्मति ययकाम॥ कामकर्षनकर्मरु। अदजा  
 तिरुलतथा। धनकावि यदिचसर्वास्थतांतिपांचयत॥ कल्केनहिसमंउल्यपिष्ठातायचउतुल। पाचयन्मदगिनाविजा  
 रुस्यालेलंउडरुमी॥ तथासन्निहनेपाकंनहेलतुजेलातिर्त। सुदयकानेवीजनगंरवचूर्णनिर्तनच॥ तलुहृदिकसंका  
 गंतेलतुममताहवी॥ गंधवल्कसमाधतंकर्षमयादकंरुवत॥ ॥ गंधयसंगतधवधूपविधानमयत॥ नखमासीसुऊ  
 नसंमुकाकेआगदृशिताशा। चन्दनंचन्दनेतानि। तानिचूर्णतिमिप्रयत॥ चूर्णउल्य४गुग्गुलुहि॥ सुवभकजकदयत। कर्कभा  
 कंकिपेहिलंजिलयालाहमृक्षिता॥ दितभकंययनेनवहिकानकनकायत॥ तदयंकलितकथ्यत। त्थानित केलेताय  
 वातादिवधपायमीजासाधनहितं। पाषाणउदचूर्णउ। गुग्गुलंचयलीयली॥ मीसीमृकानखवीलो। चंदनागदवालकीला

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



कायुडसर्ज नसं सितकर्पनसंयुतं ॥ अतिनिष्ठदयं च कुरुनीकं कर्म तथा ॥ मोक्षकीर्तिं हस्मिन् सर्वकथा इत्युक्तं ॥  
 तिलतिलैर्निधत्तं किंचित् श्लोकं दत्तं नमस्कृतं ॥ दिने कं कुरुतां सिद्धिं दिव्यधूपशालिवादिना ॥ दवा दशा कनोदये ४ पूर्ववद्वहिकाक  
 ति ॥ सर्वसोरागे जनकं ४ सर्वमं उच्यते ॥ ॥ **चतुर्कनकायकावशा** ॥ तालपत्रपूरुथं वृक्षखनपत्रमादरा ॥ तानि क  
 लाकुलवसं प्राक्कं रागं च उच्यते ॥ तन्माघे च तमकलु किं चारा ॥ उविना उच्यते ॥ गतां गोन किं प्रहस्मिन् न कं शाकिनिमूलक  
 ॥ मृद्वगिना यथा तावत्तेवैव रुच्यं न ॥ अति कं कांति कं तस्मिं किं वा वस्तु लो गतयता ॥ यादां गं च दत्तं तस्मिन् दयात्सर्व  
 च तं रुच्यं ॥ तिलतिलैर्विचित्राया कर्क नतिवर्तते ॥ गुण लीनि किं प्रहस्मिन् किंचिदर्थं निवेदनात् ॥ तिलतिलैर्विचित्राया  
 वक्तुं नतिवर्तते ॥ विचित्राया तं नायं च किं वा चूर्णं विना उच्यते ॥ जलकुल्यं च तद्वर्चमिष्टं यत्तु सुखी तलं ॥ मद्भयं नम

२९

यथा ॥ हस्तनकलमात्रक ॥ अतीरुतं दत्तार्थं किं वा सर्वं च तं रुच्यं ॥ अति कदिमवस्तु ॥ ॥ **अथ किं तलं लयका**  
 वशा ॥ तिलमुष्णं का लवीजाति चूर्णं चिन्ता च हावयता ॥ सकृदति लतं लेतं मद्भयं इच्छवा विना ॥ तलं लं प्राकृत्य यत्ना ॥ तलं लं का न  
 स्य यत्नतः ॥ अथ कां स्य पादं दत्तं लकलं न लेययेत् ॥ उक्ता यत्ना यथैष्टमं सन्मुखं उच्यते ॥ तथा वद ४ कां स्य पादं य  
 तितं लमा रुच्यं ॥ ॥ **अथ रुतं गतं लयकं नली** ॥ गममूढका लयदादी रुता गतं जीवसंयुतां नासीवी नति नमो भूतं लं  
 किं वा तिमद्भयते ॥ दिने कं माहिषं मूर्खं जीवं गे लं स मूढया न स्यात् ॥ स मयं उलं प्राकृतं लं वयत्नं तथा तस्मिं कं लं पूर्वता  
 गमथय ॥ अथ रुता गकां दाविर्न दाविर्न किं वा भकविर्न गतिवानकं ॥ तन्नागं जायते दिव्यं जीव नदसमं यत् ॥ ॥ **रुता गतं**  
**हियका वशा** ॥ जी नृपमालं रवाता क ४ किं वा कां यवदासकी ॥ दिवशा ह्य कपयं कं विर्न रुता गतं विजृ ॥ रुता गतं लमा रुच्यं



मकराधिवितिक्रियता। जीव नमसंथागमजाववनिनकलपत॥ तमजा लोहपाखड किन्नागजपुटततशाविपुचञ्चततपश्यात  
 सागिनीनं समुद्रनेत॥ ताम्रवेतिनचिंजतिरुनाथदिनं पूना। लोहपाखालिर्पुष्यवधूतमयेनसे॥ जीव नमसंविमदस्य  
 त्सम्यग्धमचकडस्यै। यावन्नालषूसकायघोटलीवविधानतशातलोहलीमूडपचातकृयाहाम्रवधूत॥ ॥  
 का पुष्पतिश्यासपातनी॥ वटकीतुलसीमिर्जगुंजवर्मपुनःपुनः। आतयासोलितकृयादिस्थवदिनपंचक॥ जातिपुष्प  
 पलेकीउतिक्कमाजंउटिकली। कोदतिक्कजयथाईसर्वमकजलाउयत॥ मत्पाखनयधम्मनम्यवाकावधमकान्ना  
 कायपुर्ववकुलजलसिकंततकलपत॥ जवतितागपुष्पा। लिपुष्पाद्यागेपुतद्वी। अननसुषकायलपुष्पातीवपथकपथक  
 ॥ वृत्तिकायासुगंधजयमृथोजयत॥ ॥ पत्नीनयतिक्किया॥ जीमता नयहयपत्नीनयक्कियायतावन्ततागनृकृष्टादिसुगीद्विषये  
 म॥

३०

संवय॥ कृत्वातिसुम्भरवलितांहरिस्त्रिगुणयुक्तक्रियता। पुनितस्वकृताथनदिनेकस्काययञ्चत॥ अल्पमासादि कुरुचवक्रुच्चिजमनाल  
 कौसनावेविस्तृतयातंविन्यस्यउतदत्तन॥ विन्यस्यउयजेघ्रितवसेयाकावत्तहिता। तदन्यसत्सकपुनगंतपडसुमान्यथा॥  
 सकिडलसनावलपिदध्मलमजालकं। मद्रुक्कासादिरवधामिधिकैरुगनावया॥ जालयञ्चततग्विनी। गतेमद्रुक्कितनाय  
 यताकृष्णायमसनादवस्त्रदःसीजायतमहान॥ सतस्मान्नि सनयाष्टनालामागमनसंगयः। सस्वदःयायतसहिःपत्नीनमितरुगिन  
 शासकानयहयपाखनागकतालत्तहिता। सकपुनसुसकायचन्दनादिपुथाजयत॥ ॥ अथतिद्विदमनादिसाधना  
 न्यजनान्यचन॥ तजनिधियविज्ञानार्थनिधिसुलकलानिसिलेयत॥ सहायाः। गोरुनोःकायाः। सफपंचयथापिवा। असहयत  
 कर्तव्यमकुलतिधिसाधनी॥ यत्रगंधारुवेयजमहिकायजयत॥ तिधिसावनमकुलवलिनासाधयदती॥ अरुमयधनेचाथ

३१



15

की

विष्णुयैविष्णुसंयुतं। कर्कटमनाऽस्योऽवस्थिकामक्रिकायदि॥ वलिर्मध्यथागलसाधयद्वलिनृचत। गधमतिनृचनि  
 हंसमावतनर्मजतः॥ ॥ ॐ नमो रुगवतमहाभूपाय महाक्रियाताय ककालभूपाय धनाय कुरु स्वाहा॥ चउयसीतिकालना  
 रुतलेयजदग्यत। तजखरुनलनामनिधिधवाधिनिमित्तः॥ ग्यनकाकावकानिष्ठा यवीन्यवकपकिलशसतेनयजतिष्ठति  
 तिष्ठिरुजनर्मजयः॥ सनधमकवमसुपंविजायजसंयुताः। रुवीतिरुत्रहायीधनजसंनिधुवीतिधिः॥ एकशीर्षवृक्षप्रयदि  
 गभवादिमरुकाः। तजविहंरुवदवनांसह्यगभवनीवच॥ विप्रनीतरुलायता दग्यतयजुरुहाश्रवग्यतजविहंरुयासाधय  
 दलितानृचः॥ हनिहंसमाकावायनाहदग्यतवत। यमपूष्यतिहंरुकेतिधिरुवसमादिगत॥ नकप्रवतिहिन्नचतजविहं  
 नसंययः। कर्माकतिप्रवाहस्यासहस्यविगोदिनी॥ अथककलगाकावे। गधकावेचदग्यतोयमपूष्यतिहंरुकेतिधिततस

37

10

5

मादि। गत॥ चजमीनसमाकानप्रवाहदग्यतवत। गतसाहस्रकविहंतदयलस्यतध्रुवा। ग्रीष्मसूर्यपुंरुदग्यतगधमतायातियाम  
 ही। वावानलनदग्यावातायसंपकवजिता॥ यदगकजविहस्यातपतगे। गवितायदिकामले। गजन्वागम्या दग्यतगधससंय  
 यः॥ गतकलेवेकहिल्लेवेस्वायमाना। पिनिच्यग। पुनग्यताद। गोरुयातिधनीगडलकथत॥ अनावाहप्रवकंषुयशानाह॥ यद  
 ग्यत। निधनलकथहंरुहसंरुहायवतानुर्ग॥ वक्रनीयववक्राणां। वनसिनेनगीखगोशवसंतिसकलकालेतिधनीगडल  
 कथत॥ जी। ध्यानतता। गधसुन्ययमवतनृचामातनायजतिष्ठति। तजविहंनसंययः॥ गधमूजयदमाधूर्यतिरवनेकीकि  
 तरुले। सफनाजयतिकालयदिजीयतिहंरुकेतिधितत॥ तथातजधनंरुयं कलि। गनवहाभिनी॥ कायासाहितिलाम्बुका। गधमूजल  
 चमिनात्॥ लिफान्यहि॥ गनावासास्त्रापथकीकितरुले। अथामूखमूदरुयार्ततजधनंव। गत॥ तदनरवन्नाययागक

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

10

5

0

को

३२

मीप्रथागितिथिवाननकृष्णमासादिष्वर्ध्वविवेकार्थं किंचिद्दीयत ॥ अथनकृष्णवालि मूलमन्त्रेय (अचिंत) कथ्या  
 मित्रहाणन निवननिधिसाधने ॥ मलेनिधिलाहा विह मां दर्शय नैवलस्यत ॥ प्रथाहृक्चविक्रया ध्वनीसिद्धिः प्रमत्तसु ॥ अथ  
 धार्तरुवन्मं ह्युर्विप्रहाचार्थरुदनी ॥ ह्यलुर्ध्वधनलाहं स्यान्मयायामनर्णध्रुवी ॥ विजयाकलं हाहं देहनासिद्धि ॥ अथ  
 शविवादाजायने साया विष्णुर्वा म ह्युदायिनी ॥ अनूना धाधनां याका अष्टायां सिद्धिं नूमा ॥ पूर्वोषाराहं हायाको मूलं ॥ अथ  
 लितदर्शनी ॥ अष्टायां च महाक्रं ॥ अथ वेले सिद्धिं नूमा ॥ पूर्व हाया ध्रुवं कमा हनन्ध्यामनर्णयथा ॥ अथिनी नवती पं स्यात्कहि  
 काकार्यनाशिनी नाहि ॥ अथ सिद्धिमां क्षाति ॥ अथ नस्य वचायथा ॥ कुनवानाथया वया होमादित्य जनेष्वने शयनीयात यो हं वरु  
 विष्णुचिप्रहनद्वय ॥ आषाढमेकनकृष्णं यावत्सपतिनाहनि ॥ तावदंत नमाषादखं क्वीतमं ववि ॥ मार्गशीर्ष ॥ अथ हाया

नकृष्णचन्द्रदेवता ॥ खन्यं सर्वेषु क्वीतया वदाषादमाहिनी ॥ कथ्या अकृष्णवेषन्यां नान्यथा सिद्धि हा क्वीत ॥  
 अनूना क्षातिवागम ॥ अथ गीर्षं पंच चन्द्र ॥ अथ गीर्षं पंच चन्द्र ॥ अथ गीर्षं पंच चन्द्र ॥ अथ गीर्षं पंच चन्द्र ॥  
 कतर्धमं गृह्य न विहते वम दथत ॥ यातालमधना सोर्धर्मं जयदक्रिणेतत ॥ तत्सर्वमं जतं नाम सुल रुद्रयासाधनी ॥ अथ  
 कालं चमं कृतां कृतता सुय नीक्षिते ॥ सिद्धं न धूनि तं कलां ववि हलत न वरुयता ॥ वेहिकृष्ण विहालं स्या वत्सयायो रुनायण  
 ॥ अथ काल्य क्षीवयं कृति कज्जलं सुसमाहित ॥ अथ नती जित नं वलु तिर्धियं गतिमानव ॥ प्रथा कर्म मति वरुस्य मूलमन्त्रेय वा  
 वावि ॥ अथ अमधना साधं ॥ अथ कतं लावनद्वय ॥ अथ अम सोनि धं तन रुत रुत वन मीनय ॥ यावदमधु कर्षन कावमाचरु  
 लं हथा सर्वा जतमिदं कर्षं सुयं क्षाति सुमय ॥ अथ जिह्वा उलगी वीर्जं वीर्जं कापा जति वया ॥ कर्षनमधु मधु कर्षं वरुस्य वीर्जं

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

नरुवत॥ कदु उवी मूलपञ्चनसकं चन्द्रलाचना। सद्यः समधुना ता सपथ्यसर्वो जता रुध॥ यथा कश्चित् तस्य काया विविधनामूलम्  
 जयतां धूका कीतिनसीपिष्ठा मधुना सहर्षा जयता॥ श्रीजिताका नमस्कृतं निधिपथ्यति साधकानक तस्या किल रुका मधुना तसमा  
 कतशोऽप्यतां जनी उदिवी चर्मजनी निधिदलनी॥ निधिः॥ ॥ हम्नः ११ ला कया पूर्व मज्जयन्नावन द्रयी डापधी नैजयत्पथ्यो रुतः  
 यथ्यतिरुनिर्पि॥ ॥ उपधर्मजः ॥ सर्वसर्वसहित श्री कौकी सौधधियल्लिहताति नतं नमविधे स्वाहा॥ ॥ उक यथा गतमयमकुः  
 ॥ ॥ अतिकृष्य काकस्य जिक्का दन्मीस संयुती। यत्तपकी चतुर्वर्त्तना दीया द्यत कज्जली॥ श्रीजिताका नमस्कृतं निधिपथ्यति साधकः  
 एतां जनीयक द्यन मूलकं मग्नकां उके॥ किष्वाखयानय कन पाताली मधुना जयता। दिवनक पथ्यकाति द्रवरा नीवयथ्यति॥ हसपा  
 दीजठामिमी दधयान् मनः शिलाशपा वज्रतमिदं र्ग्य पावदं सहमं दयत्॥ कथा हकी चक्रे च त्र एतां जत संमन्तिनी। यगय हस संयुकी

३३

10

७

तस्याप्यथ्यतिरुधनी॥ १२ गलस्या किचुल्लेन नदयुग्मं नवीजिती। रुतं पथ्यतिरुतस्तु दर्शय चम हाति निधिः॥ ३ लूक व्याध  
 महिष द्याप गधविलाचनः॥ एतां जत यूनचा अ दिवा वल्यथ्यति निनि॥ ॥ अथातं नमहा दथ्यक मल उच्यते॥ कौक  
 मर्षं समादाय नकुतस्य जयत रुतः॥ अदृष्ट्या रुवति किं धर्षं नपिन दथ्यत॥ कर्षुमाज निवसासक यदृष्टु जल वधयता क  
 ष्ठा गतिनसां वरि कथा दि दीपिका ततः॥ नकपालं ध्वलं मध्व कज्जली धानय रुतः॥ तने वीजित नैज सुं दवे नपिन दथ्यत॥ तद  
 स्तीति समादाय नकपालं विनि क्रियता तदुधल पनं कथ्योत ललाट दप्यलं धनेन॥ यतिविर्मन पथ्यत आत्मना वद नीत ततः॥ तदा  
 माग्नेमग न्करी दवे नपिन दथ्यत॥ यो वच्चतिल कं रुले सव्वे देव हि साधकः १४ र्वज नीतस्य पर्वगं मतधुमन धानयता॥ तने वतिल कं क  
 र्यादृष्ट्या जायत ननः॥ श्री काली नील संयुका वयस फदि नावधि॥ जिला हवक्षितासा उ गुटिका कावयं कृहा॥ अदृष्ट्या का विलीखाता

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



३४

[illegible]







नीच कथिता दममकतः॥ वालवृता वन साइ नमामदरुलान्वितः॥ कीटकमसिमी काल उलसु लेश्वाश्चमाक केशः॥ सचयत्त च कालान्न  
चतस्या रुलदा रुवतः॥ मासचकारि कष्टं क्रु यत्किंति (थोतत कलिका संयतः॥ यवैरुत दिनं ति मन्त्र विप्रवत सुतीति न कतः॥

को

॥ स्वात्मो न यती द्विर्जये न गु ना घोता दन कुं दया द्वि प्रीयात दृर लीव मो न दष दस्या त स च काले रु  
ली॥ ॥ ~~ॐ जीवनसंयममः॥~~ ॥ नरेन्द्र दिवसं वधा यावमा गीति वा वधि। सार्वेका मय यरु सि त मासा स्या रु लदा यि नो॥ यथर्म क  
सुमा तेष कन (गत्र कत कत) ॐ दया तिल च (न स भत मधु सपिषा॥ कदमो कति मानन कत प (न विलपित) रु लमा मल की रु ला  
खा हति च रु लानि वा॥ तिल क कत ना गुं जा (यामे सि दार्थ ली गली॥ वचा च (पय १) ली का (ध्वं याम् ४) कस्मानि ना (१४) गत्र मस्य मा सा ति य  
य क य न दाय यतः॥ यस्मिन् इन्द्र मये नू धि ना न्वितः॥ पंच प नू व रु वे १॥ स का स्य ता म कूट जीव को लो पितः॥ रु ल पृथ ग्यो धन्या (उ व द न

३४

मादिना संयतं पित सिं धूया चि म कः॥ वरु क रु म कृ त्य पि यं (ग प्री ता ग क दी व क कालं मधु य म्भू दा कं ये व व द ना ला य न स्यतः॥ मि  
लाभ्य मधु य सि च च (न स म हा ग तः॥ मि शा र्वा की ध ता या र्वा क र्वा क्क सु म ज म ति॥ मूल लष कत सी स का व द नी रु ल ति क लो तः॥ म  
धुना लि सु र्ग धी ति सु म हा ति रु ला ति सा॥ आ ब र मा से ति र व त स मूल ल ति इ क व रु स्य च धू व नी री॥ पि यं क म स्या रु ल दा य ति र्वा स  
च उ काले न वि रुं ल्य भ न ह॥ ति ति ठो कं स म्भू त्या या य व मा षे ति ला मि ष॥ ल प थ डो प थ त्प थ्या त स्या क क ४ रु ल दा य कः॥ ति हि ली म  
पि क ना ति च व नी वी हि मा षे ति ल च (स कृ हि १॥ यू ति मा ष म हि त्प थ धि तां ला पि तां च स हि त्प थि त्रि य य॥ ॥ वी जा या य नू य का  
वशा क्त स मि त त द्वि पु र्ण रु गी र्वा ला व र्ण क ज ला व की र्वा (गु षी प द रु म धु सं पि षा त त य ल प थ रु स्य स मा नि त न॥ रु ल क त मा  
षा ति ले न्थ य धू व थ म्भू हि क या क न रु १॥ य न्था ति र्वा रु ४ स हि तं च ह न्या या व द्य त ले स म्भू या ग त तः॥ ति र्वा व नी र्वा च उ नू य ला

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



मत्स्यकाठनसामांस इत्येतद्विह्वलम्। मत्स्यकस्यापि वावः।

धामसुखां रुमाभासडले ध्वसिकं । मन्त्री हवस्य शु शु हायवाला विस्मापनीमउपमाव (पति) । मस्य कोठवसति तं घत इ (पवन  
 वातन) ॥ वहतीति तका धा स्या रुसनामलिनं ततः सपना हंति वीजाति प्रथितं रुलितं रुवत ॥ ॥ अथ प्रथमः ॥ अतीना मलिका  
 याध्वगंधनायं यं हिती । तदा प्रथितं जातीनां कृममसि यज्ञस्यति ॥ दितां कसूनयासिका कनवीनक नैटक ॥ मागधी कृममसुत सर्वका  
 लमनाहरी ॥ अलिक दकसी क्रिडा रुर्गगवा अक्ष प्रिता ॥ खदरुमदसासिको ॥ रुलीतिसंततं लता ॥ अलिक मयया भयो अजा की नाहि  
 धकत ॥ वल्ली सुवकुला चास्या सुन साधमनाहना ॥ ॥ अथ वचिद्या द्विप्रथो गिदा रुद रुदा ॥ वालकृष्णा उ कस्या क मधुसयि यतं कि  
 यता वारुकि वीजय कंत जा कति त समुधनत ॥ त इ कं ऊनय दली कृष्णा उ दल सी मृता रुलानित उ जायति वाल को तित इ रुत ॥ वीजाल  
 को थेतस्मि त्रं मसि च्छगं स्य इ मय क् । पिथेक सहितं यव सहका न सदा रुती ॥ जायति ति श्वितं धरु स ध्वषा मरुतं रुवत ॥ योगताधि

तवीजं च नैगताया वनादिनां तत्र न्यपूष्यीरुवति यद्वतना उर्मणाय ॥ कथं लसति मूलं ऊवा कसुमलोहिता । धवलं कर्म सुत  
गणं ककिं नलोपमी ॥ मध्याह्न लपितं वल्यो ॥ जेन वसुधवसितं ॥ एकीकृत्य ययस्येनं लाहितं च वर्मजवि ॥ यकिं विष्ठाठं म  
लाय ययपूष्यरुलाधिकी ॥ श्रीकालतललिफं न दन्यत्रुयं रुवद्वर् ॥ यमिनी वीजं यूष्णं उरावर्मका लतलतथान्यरुं ऊलेम  
नरुं थं तल्लाल्यधर्मरुव ॥ वीजं तीलात्यलाकृतं मिकर्मकालतलतथ ॥ इतलन्यरुं महाव्यर्थं जायतं पूष्यसंवर्य ॥ यातिका  
तिये वीजाति उलजा रुलजा तिय ॥ श्रीकालतललिफांति तातिता न्यरुवति वे ॥ मस्यका उवसामां स इच्छतया ने रुवितं । वरु  
तीतिलका उर्या रुमेनामलिनं तत ॥ उऊर्मना हतिसंय प्रपितं रुलितं रुवत ॥ सुवकरुलितो साखा सफुवधून वेहिता ॥ धा  
कवल्ली समाकाय सहकाय सदा रुत ॥ जायतनि न्ये तंधरु सध्वं प्रामरुतं द्वादो ॥ संप्रोक्तं प्राकृतं द्वादं च वर्मण गजवर्मणा व्रीह



15

को

विधेन वञ्चल गच्छस्य जितामति। याकेन वहितं धरु सर्वदा मुदितां हृत्ते॥ ऊटिका चर्मला वा ४१ शरवा गच्छसीधिता ४२ अर्कल  
 रुलमा रुय यस्या कस्याधिकं नृहृदमधु कर्मधु यच्च मनस्य चमिता निती। वृक मूल क्रिये दीमात स्यान्नि वरुह रुते महत॥ आसात वीज  
 धून कर्ति वतिन् ककु गित वंताति। तिष्ठानि विप्रम धनिहिता न्यविन स नृपाणि॥ आसात घेत तय कानि मधु घताने लसाहता नि॥  
 विनका लोना वि कावालि॥ अना हतमप वितीत म्क वं धन स गुठि लनिहितां नि वात निहिती॥ अदिम के त वि वि य  
 का नि के सं ग कत॥ ॥ ताति यथा॥ कदल्या ४ पञ्च पाचता॥ रुच्य पञ्च पृष्ठ ले कदल्या पृष्ठ ३ थावा कि स्वा वा क क्रिये ह ले नि न ही म म  
 स्व पृ न ४॥ सीका च ले य य सी धि (गम य न उ त ल न ४॥ कित च क्काम धा व क्रि ४॥ य का ल्य व र्क य च त॥ ला ह पा ज मि वा श्व र्य पृष्ठ व न द  
 कत॥ ॥ सु उ धा व य च त॥ तिल ले ला क सु उ लं सु था र्क का से हा ज त॥ अ ध ४ य का ल य ध क्रि सु की र्ण पा य स प च त॥ ॥ सु उ व क्षि त वा

३८

10

७

रुकि य च त॥ वारु की का जि क ले प त व र्क ले ला क तं उ डि ४ त ल्य त ४ प च त व को न स र्ज द क त धु र्व॥ ॥ था ग य घा रु रु रु ते॥ स फ धा  
 हा व य ल्प र्क क न्य का स रु व र्क व ४ था गे प द क र्क न कि र्क व को न द क त॥ य का य वी र्क त द र्क कि र्क व को न द क त॥ ॥ इ ना नि पा क या ग  
 ४॥ मि क का च य र्क र्क स म्य ग म य य क न॥ के वि ल्य का घा व द (ग म व क त य र्क था॥ य न र्क प क का र्क इ ला च र्क ले पि ता न द र्क  
 च रु कि ४ स र्क क को उ की य व द दि ति॥ य न्ध ता म ने व प च त॥ अ ना मि ल्य य ता म य तं कि र्क ४ स रु ॥ तं इ ला न य  
 ति पि रु च र्क य का क य रु व त ४॥ उ कि था ग म य य क उ ल ली कं न ल कि त ४॥ न य र्क व र्क द ला क प्र सा नां दू य वा ता य च ४ न मि ति वा  
 कं वि स य क म् क र्क रु ४॥ ॥ अ ध स न्य धा टि का र्क था य्थ ल्य हि य का र ४॥ पि धा य ध री व द न वि धा न्या नि धा य ध री म य ना म धी र्क क ला  
 उ र्क ग त थ वा य र्क ग नि धा न य य उ व द दि गु फा त॥ अ स अ स र्क म त मी उ त स्य त न र्क र्क वा य व द त्थ द र्क॥ र्क स जी व वि क ता मि स र्क

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







40

35



मववकृण्यवयित्वाका नैदलानि॥ ॥नकल्पमानधवलोकन॥ गंधकधपावदनीलिकतिवा चूतपधरुत्यावा नकल्पमान  
 यस्तनानि मरिचिधवलानि जायक॥ ॥यशमितामिस्त्रुन॥ यशमितानि निभापि पुनश्च दीपका कलतिगंधालेलाति जायक॥ ॥  
 दीपस्य कं कुमावहृषका न॥ यजतीर्कनसहिता कं कुमाकेति समुद्रहृषदीप॥ ॥दीपवत्सुवानकायायथाग॥ निशसागधुनितरु  
 मितलावहिदीपात्मा॥ यद्यत्प्रथमिद्वर्तलु कनकचुर्विवहति॥ सिंदूरचूर्णरुलतानां श्लेषवह्निदस्यतजसा॥ यद्यदमुस्य श्लेषतत  
 तद्वत्सुवहवह॥ ॥इग्नानलकनयदीप॥ गमरुतसूत्रगतवह्नि विनचितपदीपकात्या श्लेष इमं तल्लालिजितगंगं गमालत  
 कायी॥ ॥दीपानि स्वायाः प्रपवन्ति श्रीक॥ धलूनतिलसंमिका विषचूर्णनलालिता वहिस्यात कलितालोक प्रपवतदृश्यात  
 व॥ ॥शृंगकलवकमनिहादीप॥ विषचूर्णधूलिगुणैः काचित्ते लनायता यदीपकस्या वहिने गमकं तत्सुवकस्य विडमवहति

87

प्रकलित॥ ॥दीपवसात्सर्पाकावति श्रीक॥ ॥ध्वता कं मूलजा वहिः सप्यते लयतीति नि॥ यकात्स सप्ये वत्सुर्व गृहप्रथमि  
 कोडकं॥ कपासवीजसर्पस्य वक्राकिश्वाखतडुविगतजात दीपवह्निचस्यते लतदीपित॥ गृह्यतति यदाजी तल्लस्योचमं रुवतप्र  
 नठते लज्जदीपं गमीध्वोहि कैचूर्क॥ सकृप्यसिद्धवह्निं श्विर्हवति पूर्ववतमं धू कवसयादीपसर्वप्रथमि सप्यवत॥ कृष्णस्योहिर्व  
 ते लसमेवातायिते लकं॥ ततदीपगृहोवाजी सर्वप्रथमि सप्यवत॥ ॥जलेदीपयथाग॥ वक्र इध्वनसंहिना ते लायवह्निर्कं जल  
 कलित दीपवह्निः श्याववह्निर्नर्मणय॥ ॥आकाशनाकुले कयलयथाग॥ आकाशनाकुले कनाकादिनसलिलमथमसुककनक  
 ककमपिनस्यजति आग्न्ययमिदं तालकं सुगित॥ ॥कृजवह्निपाइकायथाग॥ उंकारुलं ग्लैमपि स लपथकायथाइका विना  
 पहीतगगकं कोणमाई नर्मणय॥ उंकारुलं लवामूर्कं चूर्णं हायं नमूतत॥ सफवा नैतत॥ कश्चित् लिफं मकलवह्वत्॥ तिलमादाय

ध्वजकृष्णवलायुर्कं तथैव कुडकं रुवह॥ ३







15

को

10

गका क्रिपया जोरु वद्वदं मरुत्तु र्थलवली क्रियत ॥ (ग्लभाटुल वृत्तु लय छुक्क उम द्यट। यनमहु लमाई स्या कषयत्पुनयकुले  
 ॥ कलापुहि यतं क्रीडा जलं वेदं छतिष्ठति ॥ ॥ कदू उं वी (ध्वतव न अकि ॥ छं विनीरुत पृथ उं छिं छं कला उपा नदी तिक्रिया  
 निकमाई उं वरुं गन्धक प्रनिता ॥ कर्तं तितिक्रिय छिं कदू उं वमरु वरुत ॥ ॥ अथ द्रु व वी छी ॥ पा ० मूलं गल वधा की नही उय  
 तद्वधि। जायतत कला विजं सत्य मंत नर्म गाय ॥ ॥ यथे रू हा जन यथा ग ॥ कलित नृप द्वा तीति मं पिता सीति हल ता। यांति गुक्ता क  
 द्वा क्रि लच वलं का ताति तं उं जत यथे रू ॥ ॥ यार्थ रू हा जन यथा ग ॥ यक्रमं यन सीता य सफ धा की नरु नृ हा नात का छं अ व र्म ग  
 क्क ज क वि गति मं पिता ॥ क्षय थ द क्रि लो क र्थे अ न्न म यार्थ तं ल रूत ॥ ॥ तमी उ ॥ छं मरु य गं त य क्रम ता धि प त य त म र्म लिरु व य म  
 म यार्थ त म न र्म द हि म स्वाहा ॥ ॥ एक द्रु नृ प स्य द ग पृथ रू हा जन सी म र्थ क्रियती ॥ य व ता व र्म छिं तं ग ग न ग ग ही न य र्म क पि ल र्म क

४३

७

स्या ॥ यी कि पृ नृ धा द ग पृ नृ ध रू हा जन कटि व द्वा स्या ॥ ॥ या क ति क क न र्म ॥ रु व ति म हा न क ति हि त व र्म क रु व का म व क रु  
 ल सिद्धं ॥ ति क म ल य म पि रू हा जन म र्वा तं स न र्म ॥ ॥ कामे स द ग क व र्म ॥ सु म र्वा रु ला छ रू नी का रु व ती ति स क ति ल ति हि त  
 क्रमि द र्म स द ग म क्क क वी ज स्या पि ॥ त दे वा क र्थे ध्वानं म ग य र्म द्या व ल्म मि क्क ला क ली ॥ ध्वत न्या धा पि त स्य व क्क र्थे स्य उ वान  
 मी ॥ यथे रू रु क्क य द्वा द्वा द्वा त स्य म मा रु वत ॥ त या ल ला ट ति ल क्क क्क ला दि क्क ति नी क य त ॥ त य न र्म कि मि व ल्म क रु य म मा ता वि  
 ला क्त ॥ य ला र्म त उं द र्म मू र्क ति व य ती ति व ॥ ॥ सु र्थे रू ट्या क जाल यथा ग ॥ अ व स्या य ज ल र्म व ली त र्म पि या ल न रू ल  
 कू र्म रू हा वि त र्म क म ल रू रू रू र्म ति दि न क न म रू र्वा नि क्क र्म च स्य र्म मान ॥ ॥ वि ग ल व स न यथा ग ॥ पृ र्म रू हा ला ह स्य र्म र्म व  
 ति वि क्क न्म का ना व न्म क व र्म न र्म र्म स वि ला स क ॥ त रु व र्म य दी प क रू व र्म म ध्व ति हि त रू ल ला क का त्या न र्म र्म रू रू ॥ ॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15  
10  
0

को

४४

सुहातुतयथाग॥ नवकुर्मनुसकाहं हाजयहातकं पुहा। तमलेनं प्रथयालि मुर्खि कथान्नयन॥ निवर्तुनतयसर्वसहा  
नयति कोडकी॥ ॥ नयतिवर्तुकेयकवर्ण॥ जिहातातकमिह्वनं भावनाजताहयुती। कर्मकुंरुमिदयय्य। रुद्रिहातययकने॥  
तयनयान्निवर्तुके दर्शनान्मुखिवक्षतात॥ ॥ सव्यामिलिगलकायन॥ नतसंगकामकि। नवाकटकरुलकावद्ध। रुवतिदिग  
ववलिरेमूधमाभापितस्यर्ष॥ ॥ छिणिमध्वेयहवर्ण॥ सुनतस्तिनस्तिनखेवपुचुग्रहसहितजं दकयुनीधवदने॥ कटकसुध  
निहिमध्वेयमहिलाती॥ ॥ अधिमात्रकवर्ण॥ कवलीकनमधुक हवत्सयाजिनसुत॥ तिदहिर्कृत्तिकाकाशे तच्चर्षाजिन  
सिद्धिपत॥ हास्यास्यदाहवत्सया निग्नचुनयध्वनल॥ ॥ कन्याकामिनीयथाग॥ सुधेतलांगलीकन्यमध्वयर्षविलययत। ना  
होयोतोयेवालाया॥ कन्याहवतिकामिनी॥ ॥ जिनातिध्वनर्ण॥ अध्वर्षवचयमादी तलकनयमूयकी। यकीकथयिधेच्छीर्षवति

७

कवेवधवयत॥ कलतीनदहस्यव कलामार्धनसंगय॥ ॥ वाजोवकुमनिवत्यतिहातीतिथथाग॥ हवितालीजलावर्षकीयु  
जीतेलसुविते। तन्निफवर्षजिनसिस्तपय्यनिवक्रिवत॥ सिद्धनंगमकालीसमीपिद्धामन॥ जिहली। तन्निफवर्षचुनार्गनाजी  
सदृश्यतइमिवत॥ ॥ वक्रिका लातिनीकली॥ अध्वर्षजिस्त्रिपिरुनपिक्कावाउदतकिधत। पावकैतन्मुखकलावक्रिकाला  
सदृश्यत॥ ॥ कलिमानिकालादर्शन॥ लघुस्वर्षवयथाव रुलताध्वतमजुकी। यथयच्चिस्त्रिपिरुचमृष्टावध्वतनीनिहि  
हागहापविनिक्किफ दृश्यतकलामिवत॥ ॥ कलिमानिकवर्ण॥ उमहाकस्यकाशस्य कायवस्य रुलातिच। संप्रवैषयव  
उतफकुंउवितिकिधत॥ अध्वर्षकलिते किधकाशकिधनसंगय॥ ॥ क्षातिस्त्रितीकी॥ इवस्तिताहिलाकस्य जायतकी  
उकीमहत्। स्वयातकलतोचुल्ले ललाटतिलककेत॥ वाजोसंजायतकीति तस्मिन् स्नानेति कोडकी॥ पावक॥ जिहमाभा। स्त्रिवेन



15

को

सद्यनद्यर्षलाका जाता जलनसिका पिशातक चैयुगातिवत ॥ **॥ सुकनर्ग ॥** सुक न्वरु वरानवि की यमो इव नस्य वाका  
 षा ईव निका की ने ला ह वरु वग न्ध की ॥ वंशिका वं स ऊ न म तिल ते लं च सिकथ की कामा ह न गु ली म र्ग क थ्य रुत क अत्र की ॥ क न  
 के मूरु लं व कं वज ता नाय का च की ॥ क अ व लं स व का दी न सु द य के द य त्प दि ॥ रु द य लुं ठ का डी यी य त किं वि द्र का नि की ॥ वि य क ना  
 उ स व ह सिक का के थ की ठ की ॥ **॥ वल क व क्ष ॥** पृथ के न के प कि प दि त न वा ले न ॥ क न रु म म वि भा हि ने कं ट क ग र्ह विल रुं ॥ ॥  
 जल ह न र्ग ॥ क न मूरु व के क वि जि ता ने र वा स व दि स लिल रु नि ह म हि लं धि त मा वा ह सि कं क भो ति ज ल हा नि का क र्ग ॥ **॥ श्री व ह न**  
**प न र्ग ॥** हो म वा न म ता य सु त वि ता मा न मा ह ने त ॥ मू छि द्र य न न द्र का ति म अ ज ल म धे त ॥ उ द्भ द कि ल वा रु स्या दे का ना ये न सि च न ॥ त  
 च्छ कं वा प नं सि कं प थ ग कं थ य ल त ॥ उ कं ग न क ता ने र वा की न र्गं उ स्य पृ व्व त ॥ वि र्धं पु ष्य ति त र्ग की नं श्री र्गं ग न ल त न् पृ त ॥ अ य

४३

10

७

ना ने र वा य धू र्क रु व थ वं च की ठ की ॥ **॥ सिक व क्षा क न प ० न य था म ॥** ध व ल व क्ष लि रि व तं नृ पं सु न क सु म ल लि त ना ॥ पु क  
 म पि न द न्ध त स लिल क व लि त कं ॥ **॥ नि गो र्ग प रु क प ० नं ॥** क कू ल न ग ग ल वा चू र्क व वि ता म पि लि रि व त प रु कं सु र वि न व रु  
 ल त मा ति रु ना स पि ति ण प रु का वा त य थ र्क ॥ उ ल क रु क पा ले न घ त मा द रु क कू लं ॥ रु त न र्ग जि त वि र्धं ना डी प ० ति प रु की ॥ उ  
 ले क रु द य पि रुं का क पि रुं व र्ण ली नी ॥ उ त द रु र्ग र्ग य ज जी वि च नं दि व स य थ ॥ **॥ म सी य का न ॥** श्री रु लं रुं ग की नं रुं रु लो त क न  
 वी न की ॥ नि वा स न स म रु र्गं स मी स वी ल क कू लं ॥ पि द्वा म सी ता अ पा र्ध पं वा ह जा य त म सी ॥ **॥ ग ल ली पृ थ रु ल या**  
**त नी ॥** ति प र्ग ति स य म व र्ण ल लो रु र्ग रु लं उ स ता ति ॥ क ल्क ली त वि ति हि त हि गु उ टि का य रु व न ॥ स न ज न नी ज ना यू धि क  
 इ लि की ब मी क व न ल रु य हा न ॥ म स लि रु ल स म ति व हा रु वी ति अ टि ति क ल्प रु म र्ग व ॥ **॥ क च्छ पि णी त प नि रु र्ग ॥** त थ क

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

10

01

को

४३

कुपपानितरवत्तु (मपि खेडितप्रसिद्धं नति। तदवहिं गुजलाजं सहसेवनिस्त्रुं वति॥ कनककुरुलमइकविनाम्यपि कनककुरु  
 लानितथाचदिवं सम्ययह नमाखलं श्रमलकसलिलनिकिफातिह वति कीटकरुलानिति मइति॥ किन्नमां समलनयनयुक्तिन  
 कनकावर्गुठिनसितवकुनिवद्वयजयकहाववहवापिलितरवत्तु॥ ॥ **सूर्यप्रकाशयः ॥** सुधाइग्धे हातिन (मपि तत्कल  
 मनेहलसुताथी। कथितिरवनातपनिकिफ कांथ पावस्थितं इग्धं॥ ॥ **दक्षिणवामकालकानयथागः ॥** विषमैर्वाकालिदिक  
 लकालं समैर्जातीयमाक्रनपूषयनाक्रमदहस्रनयमपि॥ ॥ **दाडिमव्रीजमाला**॥ निखयेऽसुपकदाडिमैदिसफत्या  
 पुलितैर्येहवतितातिवीजाति॥ ॥ **जलविषकवली**॥ गंहीवस्तिवजलयप्रिसुसुलसुर्जनमासीर्लिलिखितं। शालरयनावि  
 कथयतिवद्वक्त्रकचक्रं (मपि वत्तु॥ ॥ **जलमैवानकवली**॥ अतिकृष्णरवकासितीनवनीतास्यकास्यकिमतिजलमाप

नवहवत्तुचक्रं (मपि वत्तु॥

निरुचिर्नकवराजितः॥ अलिकलिवजितविंरु ४३ हानदरतिशुद्धनिष्ठासः। सवलविमकावयसः सलिलस्यापविडम  
 तिनोनिव॥ ॥ **शोवपनिष्ठातलकली**॥ दर्शनकयनामाकनालि कीवतवइग्धालिखितानि। किंनमां कितकुरुलपदति  
 यकदानि॥ ॥ **अथरुताचाटनी**॥ हातवायसमादायखनकांयसाधकः। तिगामर्षयचक्रं न लपयकृत्ययत्ततः॥ काया  
 पुष्कततः कत्वा संग्रीयादिवकलशयययवजयनसाधकाकृतमन्दिनी॥ विलोककतीरहासवेपलायनदि (मपि दः॥ ॥ ३  
 दंतकृतवतालेखनकायैहोदयः॥ तक्रवृत्तलुनीतिवयचक्रं सनाडिकी। एवधर्मयदशाहसर्वयहतिवावली॥ ललुन  
 निवयवालि (मपि दः नेवधययत। तक्रमध्यालमाखल पुहायाकिपनाप्रखा॥ ॥ **सूर्याचाटनी**॥ कुनगम वहिर्नकतहा  
 विताकलितोहवहिप्राणन् रुलिनामपि धावती॥ मूलसीद्गधयगविधवाहिलचक्रं समन्वितात्। अकपयचवित्यसं मुखिका



15

को

80

ककनं गृह ॥ धरुनवीजचूर्णं वा विषं वा पवित्रं तिले ॥ तेषां वचविषापन्नं तिले ते लनपवित्रं ॥ वटिकां स्थापयन् कुरु जलं नञ्जति  
 वाधयत ॥ रुक्मणं रुक्मकयं यानि रुक्मणं मूषकाध्वनी ॥ तालकं कागविष्णुं पत्नीषु सहपवथत ॥ आलिय मूषकं तनसजीकनुवि  
 सज्जयत ॥ तदृच्छासग्यं त्यक्त्वा पलायकं च मूषका ॥ माऊ नस्यमलं तालं पिच्छा मूषकमातिथे ॥ तमाधाय गृहं त्यक्त्वा सद्यनिथा  
 तिमूषका ॥ गंधकं हविता लेंचं बोझी विकडकं समी ॥ नवीन मूषकं पिच्छां लिफा मूषकयुववत ॥ **॥ मूषकमत्कला चारुनी ॥** मू  
 ष **॥** अधिप गवनी गुडं लत ॥ कली लवयसा चूर्णं कर्तं तस्य वकं प्रके ॥ दीपामत्कं नसं धर्तं तडासं नाना यधुवीकक  
 होजनामत्कं वक्ता गयनाया किमत्कना ॥ नाहिं सुरुलपं ध्याति वहिमत्कनिधं गयत ॥ तदीयदर्शनं देव किं यतति मत्कना  
 ॥ सवकुरुलं वक्ता स्वदायामत्कना वह ॥ ककटवसायुनितकली नस्य कविनचिते स्वगृह ॥ आकर्मति यदीपद्यातिताम

10

01

कुरुणतसहस्रमहं ॥ **॥ सर्वमत्कला मूषका चारुनी ॥** अर्शं नस्य रुतं मूषला काणे वालपुत्रुली ॥ ध्वतायनाजितामूर्तं रु  
 त्नातकविडंगकी ॥ धूपं सज्जनसापत ॥ यदया गृहमध्वत ॥ सप्याय मत्कना मूषां ॥ गंधार्थातिदि ज्ञादना ॥ मूषासिद्धार्थं रुत्नातकापि  
 रुत्नरुतं गुडं चूर्णं रुत्नरुतो धर्तं गृहं सज्जनसात्ति ॥ मत्कला मसका ॥ मूषका विषकीटका ॥ पलायकं गृहं त्यक्त्वा यथाय  
 थं मूषकातना ॥ कौडकिया सहलात विडंगं विरुलायतं ॥ लाका नसादकं धूपं धूपामसकमत्कना ॥ ना गयनाजसं महं सप्यचविक  
 मूषकातना ॥ लाका नसादकं धूपं धूपामसकमत्कना ॥ नाजा सज्जनसाजी न सप्यपायकं धूपं रुत्नातकविडंगमनिधं वकं पद्म  
 कंतथा ॥ अर्शं नस्य यधुपालिसमं चूर्णं यधुपयत ॥ सप्यकीटक रुताति पलायकं नसं गय ॥ वक्ता नामसुका हति धूपं द्या गृहं  
 वक्ता ॥ वक्ता लपनाजितामूर्तं वक्ता लरुतकुरु मये नीविडंगे ॥ धीवासं रुत्नातकलाका नससज्जनससं यकी ॥ धूपं रुवतायकन

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

अस्य द्वादशममसितामादशानागयति रुडंगम ईश्वर्यलमकुनामशक ॥ ४ ॥ सहस्रका ॥ ॥ मन्त्रिका **आठनी** ॥ रुकपि रनतलन  
 लिपेत्पुटलिकाकृति । आमायाय गृहायाति माक्रिकानाजसंगय ॥ ॥ अथ **मन्त्रद्वयलकवर्ण** ॥ ह्माक्री लीगली कर्न मूलमजा  
 हिमविता ॥ तच्च **पञ्चाक्षरं** नाम्ना दयल्लि दयनं वक्तु ॥ ॥ **उन्मभाव** लपय कर्मसु त्तविद्या विष्णवद अमकस्य रुजवर्त रुजय  
 मूर्तिरु रुय २ आगति धूने धूना यात य **महीत** लकी कय लन कजा त्याटित लीगलिक कय लिपे गनी ॥ ॥ हीमस्यापि महां वलस्य  
 दय्य ह्यति किमत दन्य स्य ह्यति गथा कि ॥ ॥ गजदय्य **ह्यलकवर्ण** ॥ तिजसु दज लीजिता क ४ समवसु ववा यलमपि नरु सतना  
 गयति गलित दय्य यति हित सु **पिमातंग** ॥ ॥ **कूर्कटदय्यकवर्ण** ॥ चनलन समदता सुत्रवापुली मूल विनचित गुटिका विनका  
 लयापित स्यापि वलहयति तासु च उच्य ॥ ॥ **यदप्रसिक्तवर्ण** ॥ रुध्रानवटमूल उ कषु गाम्जय विती अंगमम दयनि स्य यदप्र

४८

10

1

सिललाह वत ॥ विश्रुका नाचत नमूलैखादशु वलाह वत ॥ वक्रदछां धवामूल की नीपीत वल यदी ॥ ॥ **सुखनकवर्ण** ॥ धीपिक  
 मीर्मा गायतन याचय रु कथ रुत ॥ चर्वषमा सथा गन किंक ने ४ सह गी यत ॥ ॥ अथ **सावस्तव** यथाग ॥ यथाया लकवर्ण **ह्यल**  
 सैम्वर्ममनिर्वचवा ॥ लिप्रयति रुत रुत द्यत वा विनति पत्नी ॥ दता च उच्युर्ण की नी आर्ष की नी विद्याचयता दत ॥ अथ विनति स  
 वाधे धा प्रतिवा क्रिकता ॥ दवदा शविम ४ सपि ॥ गाम्ज कटको निका ॥ ववा वासलिलि हंति रुक वृद्धि यव रुति ॥ वा की मूली ववा रु  
 पी पिप्यली सम दूर्ध्वता ॥ मेधना रु कथ कर्ष स्य सवा ग्रायत ध्रुवी ॥ अथामा नववा रु पी विठ गनत यपिक ॥ गता वनी रु रु वीच सम  
 दूर्ध्व हनी की ॥ दतन रु कथ कर्ष ति स्य यथ सह सुकत ॥ समूल यजाम्जय वा की यका ल्यवा विष्ण ॥ इल्लखलन स रु य न स व रुति  
 वी उच्यत ॥ च उच्युर्ण नमहा ग दत य रु विद्याचयत ॥ हविषामलक चैव विद आमा ह नीत की ॥ चनपि पलिका हा ग ॥ अथ विवा विका

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

४८

मनापिप्यत्याथविठंगतिशर्कनामध्वनवचा॥ एतत्सर्वसमालोच्य ज्ञानेर्मद्विनायकवत। पविष्वकीं उतवृक्षा तदहदवतान  
 थह॥ तस्य प्राज्ञानमाखेन वाकवृद्धिं प्रयजायत॥ सकनाक्षययागेन ननं ४७ प्रतिधनारुवत॥ अहमास्यथापानकिं कने ४ सुहमा  
 याते॥ मासमाखेययं जानंस्वयेभवकविहृद॥ हृत्येसादश कृष्णति श्रंशं सिविधानिच। अथ जानां वतानीनी पं सविवात्पय  
 तसी॥ घटं सावस्वतनाम सुनस्वत्यावितिमिती॥ विष्णोऽजमादवजनी द्रयजीयकोति कर्षकलमधूकसे भवमृगगन्धा। चन्द्रयेरु  
 तसमयविहितसमयि वोग्यवतोतिवसति स्वयभववकु॥ अह्ययामागन्तिविठंगमसा ववारुयां पुंति चमूलतपूषि। घटनली  
 दायकनातिमानवैदिनजया श्रुथसहस्रधाविली॥ वाक्याहल चन्द्रव जाती न सनय ४ पिबेता॥ सफाहृत अपितत ४ प० ति ग्रंथयथे  
 री॥ प्राणववाप्रविचमागधिका हयां ले ४ सिधुत्कविश्वमधुनिग्रसमन्विता हि ४ सावस्वतघटमे जाययसाविषकी पथं रुवदववसा

10

७

गलगरुदानी॥ ॥ **सर्ववापजय ४॥** गजिक्ताजिखिचूणवामखणिनसिमीकृता। कुरुत सर्ववापजय जययधसमूहता॥ मा  
 र्गशीर्षिठपूष्पयि जिखिमूलं समूहयत। वाहो जगति वाधार्थं विवादविजयारुवत॥ वधनाम्नयात नने निरवाम धनसंगय  
 ४ मयनादस्यमूलं उ मुखरुं नानवद्विती॥ यनवादीरुवेन्मूकार्थवायां तिदिगकनी। एवत गुजा। किंमूलं मुखरुं इष्ट उंठाज  
 त॥ अजायामाहर्त वंशवध्वर्क कर्कवावित॥ विजययापययूदं शंक्रम धनसंगय ४॥ ॥ **सुप्रभविजयकनेली॥** सकं कवाकृति  
 गच्छमलितनेव कावयत। धनयधकिग रुऊं महायूद जयारुवत॥ तन्धात वाधयकृत दिवकीति धनारुवत। यहनियह नयेवसीता  
 नविहृवा रुवत॥ वाचनारवेजनीरासिचन्दननाथमदयत॥ तिलकैकावयकृत विनाधेजयमाधुयात॥ ॥ **वीनवाद्यादिरुयहनेली**  
 ॥ अह्ययामाहर्त वंशवध्वर्क कर्कवावित॥ विजययापययूदं शंक्रम धनसंगय ४॥ ॥ **सुप्रभविजयकनेली॥** सकं कवाकृति

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



सुवर्धरुयहकिचोववाधाहनीरुवत॥मस्तनवहनीमूलं हस्तकं व्याघ्रहीति नृत्त॥ ॥सुनहवनी॥पुनः कश्चस्यप्रिलितं निनीषक  
 सुमावती॥हस्तकं सगमाउल कर्चहेप्रतिधाप्रिता॥कक्षपस्यानिनाप्रार्क लङ्कनीवेन्द्रगमयेकी॥काकजं घातनाकीटं तथागतयदीकमि  
 शायंरहिपुटिकाकाया नामिकावक्षययुतातद्वर्णतात्तुनीहकि स्यक्षवापिमहाकुर्त॥कतिष्ठतामिकामध्वदग्निदोयातितत्यनः॥माहवा  
 हकमीचूर्णं कृमाहितं लयावित॥तनलिकस्ततागच्छेहृक्कलाघावयावित॥मकवस्यमहालिफं दकहस्तं यदर्थयता॥मस्तिर्वधस्तनयाति  
 मकस्वस्तं प्रयाजयत॥जिलासाचूर्णं माषं वमीडिकामध्वल्लत॥मयूनायहं मतर्षा लधेनावीरुनायहं॥ ॥ग्रहलदनी॥ककलाज  
 स्यप्रिलितं अर्धलिफं उदयेली॥संस्काययजिनमूर्द्धि ग्रहलद्वयतजल॥मयूनात्कनप्रिलितं दयेली॥उलप्रयत॥ग्रहलद्वयतविजितमि  
 न्दस्तिकीउकी॥ ॥तालयेग्रहिनी॥मांसवकांत्यलं उलं ककलासनराजयत॥तमलेपुटिकास्यर्णं हालेयं ग्रहिनतुल्यत॥निखा

यावावतवध्वारवंजनीरुयनीमजी॥पुटिकास्यर्णमाउल तालयेग्रहिनतुल्यत॥ ॥श्रुतनीकयाघातावतवनी॥जिनामिमदसीपका  
 किफलाहृगलाकया॥जंवीववससंथागतं विक्रवतस्यह॥ ॥कयाटीघाटनी॥पनयसिलिष्टनी उंस्तुक्कलाहृनकावयेताष्ट  
 खलंचपटकाय विववतयति वासनी॥उहीर्यमन्दिनेयावत गृहीतावत्समाचवत॥तत्सर्वं तिक्रियेहायं जगधयसाधकाहमेशा  
 प्रवाहाहिमस्तकांष्टीवजैहृद्राहृथहृथा॥जिलाहवसितं कला वितीगत्रलसंयुती॥निर्गलाग्निलयं जालिकयाटीघाटनीरुवत  
 ॥ ॥श्रुतनीकयाघाटावतवनी॥हस्तकं सिंधुवा नस्य मूलं वादध्वस्तं हनत॥स्यर्णनेवीधविचुंदं कुरुतनीधुमकुर्त॥ ॥वीदीविमस्त्र  
 नी॥जिरिविक्रुष्टयापादानं गमगमननिखनतुत॥सफाहादुष्टं चूर्णं स्यर्णवर्धहिनतुल्यत॥ ॥लाहृकंदनयकानः॥स्य  
 कामिष्टिकांष्टीवजैहृद्राहृथहृथा॥जिलाहवसितं कला वितीगत्रलसंयुती॥निर्गलाग्निलयं जालिकयाटीघाटनीरुवत  
 ॥ ॥श्रुतनीकयाघाटावतवनी॥हस्तकं सिंधुवा नस्य मूलं वादध्वस्तं हनत॥स्यर्णनेवीधविचुंदं कुरुतनीधुमकुर्त॥ ॥वीदीविमस्त्र







लतेन न लिपितं दृश्यते न च। श्रीरघुवंशे नामाच नृपे नोदवहं वत॥ ॥ **नारकसति नीकली** ॥ नकारितस्य मूलतः तिलकज  
 लपविता। कनकयुगलरुक्मिणी दृश्यते नारकसाकृति॥ नृकपालं कृष्णमयो धूनयि स्वाविचक्रल॥ नकारितवीजा न्यकारितकथं ताति  
 विवक्ष्यते॥ अथ कथं विनकीथा कथं रुद्धी जसंग हीतही जाति गृहादाम मधुकिं समन्वित॥ यदि किं रुद्रा मरुता नवा त्वर्ग उ के  
 जने॥ अथ के नरकसाकाना महकुतमिदं कुवि॥ ॥ **मयूनि नीकली** ॥ वाजी कृष्णवकुदं मयूना किं विनिकिधेता रुमी वीजीर  
 दा कृष्ण कृष्णरुमी निवाययत॥ तजा तर्ही वसंग्रामा कथा कथं च नरक॥ तर्ही कृष्णवकुदं मयूना दृश्यते जने॥ विषममृष्टि  
 तं तं सप्यपि लं च वाचना मदेष्टं तिलकं यस्यां पथ्यति मयू नवत॥ ॥ **माजा नि कनली** ॥ तथा गं कृष्णमाजा नि वकु वे न उ वीजकी  
 तजाति न लु वीजाति मकं वकु विधाने यत॥ तं पथ्यति माजा नि मनेथा ता जसंग य॥ ॥ **रुगलदिनाता नृपदं गी** ॥ रुगलं ध्यान

को

अ

भद्रादि वदनवापयत्थ क। मयू नमयथा रुमी जाता सिद्धि स्थिता दृशी॥ • ॥ **मनूष्यवनि नीकली** ॥ कृष्णधर्मा सीना जव कस्य पृष्णस्य  
 रुक्मिणी यथा तथा व कानले क गतान सप्याति स्थिति मानूषान॥ ॥ **अनक नृपली** ॥ ककला मस्य संग्रामं प्रवृद्धं किं लापार्थं गी॥ इति  
 ह वै दितं वकु॥ अतस्यानेन नृपधके॥ ॥ **श्री नृपक नली** ॥ वेक पुं जा रुली वायी श्री कपालन स च यत॥ जात रुली किं पदक॥ श्री नृपाद  
 दृश्यते यमान॥ ॥ **किन्नरसिकाति नीकली** ॥ नवहा छवि नि किं य॥ किन्नरा सां उ मूषिका॥ सना सं ककला स च यथ क हा छवि नि कि  
 यत॥ उ यवा स यथा जात तथा दया ह हा जनी मली तथा पृथक् प्रार्थं त न ना सी पल यथ॥ किन्नरा स दृश्यते की न ले पा नि वरुति॥  
 ॥ **वायु के नली** ॥ वायु रव पत्र क व ना रुली की न म ही तल॥ नि किं य क त्र म त्र ना रु यथा क र्म रु वे ल त॥ धून यत रु यत्न न नायन  
 यति वा सनी॥ तल रु लति रुक्मिणी तल वा ह समा ह न॥ तान्यत न व संग्राम तिलकं का न थ दृध॥ साधक रुक्मिणी रावन वायु नृप ल द



15

10

5

0

<sup>७४१ पा</sup>  
 न्यम॥ तत्तुलान्यथवाकं न धनयद्यायनामहिः सुखं कलायथासम्यक् प्रथिता व्याख्यवद्वतः॥ ॥ **विजोगमकनली** ॥ विजोगिनि  
 समादाय तत्तुलनाथमद्यता तल्लाटितुर्क कथा जिजकाया सुवेन्न ॥ तल्लाटि द्यथायाव हवेदवत ८४ प ॥ ॥ **कपिकनली** ॥ क  
 प्रियप्यभितिकि य पुंजावीर्जयन्न ८४ क प्रमहिकया प्रयत्नाथनेवाहिषवथ ॥ तद्वक हलवीजा नि यथिताननरु कं ॥ धनयक  
 दिद ७१ उसाका दाननतां वजत ॥ ॥ **सर्वकनली** ॥ वदत क प्रसप्यस्य यं ववीजा नि वापथत रुहितानि र्गच्छ समादाय सुनकथं  
 ॥ **किथसर्वकनली** ॥ उत द कं नास्य सोरुणी ॥ उक सो द्यथ सप्य ॥ ति विधं मरुतुत ॥ ॥ **वेधिकनली** ॥ श्रीकालोक्तं तं लं न लिफ  
 हस्तमं दयत ॥ ति उं छी प्रज क रूमो ॥ किथं रुवति वधि कं ॥ ॥ **मत्स्यायनली** ॥ मत्स्याद नलिख रुवति न मत्स्या उच्यते मिह सलिले स  
 हसे वति रुने लुपयत सत्समं द्यात ॥ रुत्तान का रुवती ली मत्स्य मत्स्य प्रलेपयत तं जीवति कलकि फा ८ सद्यः सद्यः रुवा किल ॥ ॥

५३

मत्स्यसर्वकनली ॥ क प्रसप्यो नवीया क रु द कं क प्रमहिकी ॥ कि ह्याथ कापथ उ उ क प्रधक नवीज कं ॥ तथामत्स्य मत्स्य मत्स्य तदी  
 ऊं वपवापथत ॥ पथ क पथ क किथ रूमो तथा ८४ र्वा समा ह नत ॥ सप्य स्या निखया मत्स्य ८ स्या जे सप्य रु व वी ॥ मत्स्य स्या निखया स्या  
 तं न मत्स्या रुवेति ॥ ॥ **मैहकनली** ॥ नदी जे वाल सम रु व रु व मित्रि माहिष दधि मथित ॥ श्री लो डित न जाय कया ममां  
 लमं डूको ॥ ॥ **नाताविषडीवात्यलिः** ॥ यस्य क स्या पि जीवस्य पि रु मं काल लपितं ॥ विडि न रुं कले कि फं सजी वी स्या रु रु दती ॥ ॥  
 सुक धान्या त्यलिः ॥ सुक ल वल क रु ज ॥ त व रुं विला उयत ॥ घात ८ घात सु घा वल दिना नाम कति ८ ॥ त रु द रु रु वी डं उ कलेमिका  
 तिथी रुयत ॥ महि कार्या तता धन्यं वापय सस्य नाहति ॥ त द्यका रु द नं गी यं सु व धान्या ति को उ कं ॥ ति किथ सु व धान्या ति सा र्ध ग रु व रु म  
 ॥ ॥ **सिंयाकु** ॥ रु व कं त विस्फा हं उ विव्य स ॥ जात क नाति मं य रु नि वृषि जायत रु लात ॥ त द्यार्थ रु लाय र्थ के लोक रु वति को उ कं ॥ ॥



15

10

को

१४

खड्गकनली॥ जलकादम्वचूर्णं नवनीतनरुक्थन॥ यावज्जीवंतस्यैषा ननःखड्गसमाप्रयात॥ धरुनयप्ररुक्कलप्रुनःस्यय  
 तसुखी॥ ॥ अथान्वयगुटिका॥ कृष्णकर्मकलीतले सुकपर्वजगज्जमली॥ तालकं काष्ठविस्फुटोलिखितं नसंयतं॥ नवीकन्य  
 कयापिष्टं कायाष्टकं वरीकनं॥ नयाकमदनालस्य स्यात्तं तेषां कति रुधिरं॥ गुटिकासर्गमाखल महिकाकायवायन॥ ताम्ररुष्टा  
 तिस्रवलि तयालि स्वाति रुमवत॥ दध्यततफलायनं कालिनातिष्ठ प्रविवेत्॥ दध्यतत (ध्वतगुडाध्व) (ध्वतारुष्टाप्रता) रुवत॥ अकपठ  
 तयालिफं दध्यततं कासुराजनीं स्त्रिपर्वतयालिफं कवतदध्यततं जने॥ अयूपवद्धकपर्वकपिलं लडुवतुली॥ नमोवन्नावि  
 कलीकाध्वयं दध्यततं जने॥ तयालिफं नर्कं (०) दध्यततं नेलीषवत॥ अर्धद्वयगुलीकाति तयालिफं दध्यततं॥ अंगुलीचतयालि  
 कादिध्वसं दध्यततं ध्वी॥ राष्ट्रपाकस्तुतस्मै कुरुकावस्तुलाध्वत॥ तस्मै गुटिकाय कं मूर्ध्नि वीधं तु विरिधं तासमृदा दध्यततं लोकं ध्वि

७

जस्यैगिवादिता॥ वृत्तिगुटिकाप्रराव॥ ॥ समुद्रकनली॥ मधुकवसयादीयमवधे कालथान्निजि॥ वडदि रुयतमध्व  
 सागवदध्यततं जने॥ ॥ सूर्यमण्डलदर्शनी॥ मातुलिंगस्य वीजात्कृतं तैलं ताम्ररुष्टाजने॥ कृष्णपदातयप्रस्थमध्वकसंनध्ववि  
 धा॥ मृतिपूष्पनसं दध्यततं (ग्रा) (ज) जतसंमन्त्रितं॥ अजिताकातनःपण्यमध्वकतात्रकागलं॥ (ध्वतगुडाध्व) (ध्वतारुष्टाप्रता) रुवत॥ अकपठ  
 वयतातसुखं वलिकादीयं प्रकाल्य प्राक्कज्जुतं॥ तनाजितानवध्विर्द्विवाप्रस्थतितानकी॥ ॥ कलिकाकादलीनी॥ नाजीविह  
 गध्वकं तु निवर्द्धं गजपिठका॥ (०) वयदध्यततं संचनसूरुगस्तु॥ ॥ पिण्डवदर्शनी॥ अकपठनसं ध्विर्द्विगुजामूलोदना  
 ककी॥ अजिताकातनःपण्यमध्वकतात्रकागलं॥ ॥ मध्वनाग॥ रुवध्वसं फमकुं लवितिकादस्यकीलकी॥ अर्धगुलीचतयालि  
 नमध्वनालाविनयति॥ ॥ तुंनभाहगवतं रुपायतुं स्वातसाहा॥ ॥ सस्यनाग॥ यथेन्द्रवायमूर्ध्नि रुद्धलीकस्यमूर्धिका॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







॥ मत्स्यवाचनी ॥ अका मूलतु रीपिष्ठा मत्स्या र्थेयकिपुदुद। अथकत कृत्वा मत्स्या रुदोपधवला दहो ॥ त्वह  
 की नं कलु लु उ म् वलु कामिथु मिथिते ॥ जला गथकिपुह न अथक मत्स्य जात य ॥ ॥ एक कता प्रवति वाचनी कामक ॥ य जमी वादनी उ  
 लय कति विह विला कती तलु सेव रु वेद व सुमिदि म्मि उ चोत ॥ सु र्क हि म्मि लिता य छु द्वा पाति व ह य ॥ तस्य ग क कता मा ॥ ग क य व रु विष  
 ति ॥ ॥ व क म्मि व क क पाठ व क व म्मि र ग म्मि व क पाणि पि जो व ॥ ग क पली उ कि ली न च प थ स च ॥ ग म्मि क जला ग क कौ न उ य नी उ  
 कि नी वा व जा न् च ा ट का लि २ ग स न चालि द वि उ र्क क न व न क न च ना रु सि क न न य न क टा रु क न आ प ले ह थ य न रु ॥ जी व जी उ वा न  
 खिल ली पा रु ली अ धि पा र व न कि न च त वि ह्ना न मा हि न ल ग ग क म्मि व न व रु ठि ति त स म स क व द र्क म्मि सि दि पु न्ना थ जी म हा द व की आ क्ता ॥  
 ॥ व क ज द न क प ट रु कि न क प ट रु कि न क ध ना ॥ अ स मा र् वा र् सि दि वि ह्ना न क न थ न वि ह्ना न म्मि न ल ग ग क म्मि व न व रु ठि ति ॥ ॥ म स क

३३

म्मि १  
 म्मि क्मि सि दि पु न्ना थ जी ग म्मि व रु की आ क्ता ॥ ॥ व रु ठि ति जी ग म्मि व रु ग न ठी द व अ थ य रु वि ह्ना न ह ल पा णि म ल रु लु से व रु द र्क ग रु व  
 न रु इ हि न ४ ग ल क्मि क्मि रु स ल लि दि व स न ठा कि नी म्मि वि म दी अ म्मि क क लि म्मि उ ली ती नि र व र सा न रु व रु उ उ य न रु व रु दि ग म्मि द ना  
 न वि व पा क क पा थ स नि वी म्मि न् का र्म के त हि म्मि सा क क्मि सि दि वि व पा क की आ क्ता ॥ ॥ व क उ ट व क प ट प ट ति न स प रु रु हि रु द ना  
 उ थ रु व ली ति उ म्मि व रु ठि ति म्मि म रु क प ठ ति क्मि म्मि सि दि पु न्ना थ जी आ क्ता ॥ ॥ व रु ठि ति ता व रु नै ति व रु द रु ठि ति  
 व रु रु म्मि क न मा प हि ले म्मि न् क्मि पा थ मा हि ल कि आ क्ता य न म्मि सि दि पु न्ना थ ॥ ॥ व क उ ट व क प ट व क रु उ रु ल वि रु व रु रु ति  
 व रु रु म्मि क न मा प हि ले म्मि न् क्मि पा थ मा हि ल कि आ क्ता य न म्मि सि दि पु न्ना थ ॥ ॥ व क उ ट व क प ट व क रु उ रु ल वि रु व रु रु ति  
 व रु रु म्मि क न मा प हि ले म्मि न् क्मि पा थ मा हि ल कि आ क्ता य न म्मि सि दि पु न्ना थ ॥ ॥ व क उ ट व क प ट व क रु उ रु ल वि रु व रु रु ति  
 व रु रु म्मि क न मा प हि ले म्मि न् क्मि पा थ मा हि ल कि आ क्ता य न म्मि सि दि पु न्ना थ ॥ ॥ व क उ ट व क प ट व क रु उ रु ल वि रु व रु रु ति



वरुवायालकी **पदी** ॥ उं धना वरुमहस्यनीरुदयवरुका **लिका** यागतीयुत्रवरुवामुखवक्रविष्महस्यनी ॥ नूनिनिमीदिलिदि  
 निमीदिलिदिनिमीदिलिदिनिगच्छति नखिउववधायगार्थननचरुगति हं श्रीरुवकी आरु ॥ गतिगिस्वार्धनमकु ॥ ॥  
 जतश्चकैतमकुणायन ॥ उदुल्लिखित ॥ कयर्तुनयति किंयुमियमाणापिजीवति ॥ ॥ अथपाइकासाधनी ॥ अथलालिकिता  
 को तले धययधुतसर्वय ॥ तन्निफुरुसपोदसुयाजनानीगर्तुजत ॥ यनीवीनिगर्तुमूलं प्राकड्या ॥ समाहृत ॥ तलेधुकातन  
 लनपादपालिसर्तुजत ॥ विधिनाककलासस्य धुरुगर्तुदकेली ॥ खिलाहवर्तुवकधायमिष्ठागतिरुवते ॥ ॥ पाइका  
 युटिका ॥ अनेतसाधकध्वेलातयगत्वातिर्यतसादेवनायावध्यातिरुक्का रुकधार्थकिंविक्केचिदाममीसंकिधती ॥ याधसूताहव  
 तिततपावदीसाधनिकजयसर्मकमिचिन्नलिकादयतिक्रियते ॥ तदधार्धद्विडसिक्केकनरुद्धाचिन्नातयगत्वाचिन्नाडिद

311

यस्यायनिनालिकादयतिधयलाहगलाकांतलिकामधमाएजेला तदुल्लिखितरुसुतवधयितुगलाकामुधयत ॥ तनेवमाएजे  
 नाउमधयथावभागच्छदितथायर्तुकयार्ता ॥ ततश्चिउं द्धिर्तच्चिन्नाविषयालिपताततुरुद्धका (धानित्यवर्तुलोपहायनपूजा  
 कयार्ता ॥ यावत्तसुयममुतिरुद्धयतितावेन्निर्त्यडयनिगत्वातिनीकयत ॥ सुटितसतिपुटिकादयं गार्ध ततावकादधार्धयमा  
 णायवाकाकामनूधामिलिततस्मै एकादादवात्रयनामूर्धधाययत ॥ योजनद्वयदशकंगत्वातिवर्तुं हंतिमिधययोग ॥ ॥  
 अथकुरिया **महान** **पुथा** ग ॥ ॥ इववरुल्लयकसंकुलीतेलहाविनीउक्तामामकुधहकिपियासाचनसंगय ॥ अथामार्गस्य  
 वीजानियात्तककानियावयत ॥ पायसंवाविकाकीनेउकंमासकुधयह ॥ इधसिकुरुलंधाया ॥ दिनेकंधययह ॥ सि  
 नाअसहिर्नयायमादकुरुकयहेन ॥ दणनाउकुधहकिपियासाचनसंगय ॥ ॥ अथकलकालिमा ॥ कांतपायाएरु







15

को

जे

यत॥ तिष्ठ नुमासषट्कांड उमनीकुलसन्निहा वागयलान वाकुर्द्रुवोत्तम्यजेयर्त॥ नानानातिगर्वा ल्यायावकुवकि  
 पिच्छी॥ पलेकंतसमादाय लाहचूर्णं यत्तय॥ विरुली विरुला चूर्णं दाठिमस्यरुतलच॥ छुर्कं चूर्णं पलेकी कसपे  
 र्वाकांजिकं समं॥ रा॥ छुसर्वं यत्तकिंचिन्निकिधत लाह राजने॥ रुतनाजकनछे लुडवकिश्वातयकिधत॥ डिमहस्य  
 यत्तनज्वरदवीयुत॥ पुन॥ ततर्कं वेकयहंत लप॥ स्यात्केण वंजनी॥ डकं नूकं यथा गेष्वेष्टमनछे यत्तके॥ शानिना नायोदि  
 वास्तानं यकिं न माधगन्यत॥ तदालपट्टाकं न दग्धस्य चक नूयुन॥ चूर्णं न मिथ्यगी सने लिफकिं शसिताश्रयि॥ दिव रु  
 कलसं स्थाय रुव न्यपिगतायुष॥ समं सखि रुला वीजं चूर्णं वायसभलका॥ हयमानयनी लीच उउयुनवासित॥ कृत्  
 तिउमनच्छाया धवेला नपिमूर्धजा न॥ नील्या मवी जाय सलाह चूर्णं की॥ रुलपिकां राव हय वकमा॥ के लाया विधरु

10

७

सहकांजीकत॥ शिभा नूहानी ल नूचं शानि यरुता॥ ॥ मृथकं छुर्की कनली॥ वडीकी नल सफा है साधय दाश्या  
 रुली॥ तचूर्णं संपयहं लेला चूर्णा रुवीतिव॥ केण च सर्वनामालि र्वाखिनी वरुवीतिव॥ सफा है वज इग्वन सुग्व  
 ता हा वयहिलान॥ तस्य सैलं गहीला थला चूर्णा रुवीतिव॥ चका नाम ल चूर्णं न वडीकी नल सफधा॥ रावयहं न  
 लपन॥ शी कृयाति चमूर्धजा॥ सिद्ध नं चाठिका ग्वता जलन सहप्रयत॥ तज्या ताने न मागल सुष्टु जालि रुवकिहि॥ न  
 वाश्वगंज जीवानी छुर्की कनल मूर्धमी॥ ॥ नूयु गतयतन नीच ताने कं नजनी द्यय॥ मन॥ शिला च उल्यां र्वा रुही की नल चय  
 है॥ रावयदकं डी॥ की॥ विदिनं चाखि यय॥ तत॥ कृष्ण उज्जुर्वि रुवयदिन सफकं॥ कृष्ण उयतता गश् किश्वा मास  
 सुमूर्धनं तने वसर्वनामालि ग्रहं कं शान्य लपयत॥ विष्टयदकं डी॥ य॥ छुर्क वल्गु रुवकिता॥ सुधा वरु इग्व रुविता ल

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

को

10

लिताविमूखाताचिकुनाः॥स्वित्तवनिर्मलकणधसूनसदृश॥रुवकिलोकस्य॥ ॥दीर्घकणकन॥प्रटपाकेनरुदक  
 हसीकयविचलुथत॥रुंगनाजननेवलिनासुदुकोनयत॥तीलीवाजनासुकुसुमदीर्घकेगुरुवनिवाकाकीन्यापयवी  
 जाचेनक्रमकसुमेकेतकीनीवमूलं ॥सुसुकेसस्यगिजिरेलंयततेलमध्यानिचकी॥तन्मध्यलाहचूर्णकितिपठनिहितमा  
 समकननामकोलाकानाम्कार्णलिकलेसाहितदीर्घकेगविहकी॥ ॥कणवद्वि॥धिरुलायात्यलकनयदिकासुगि  
 जेनसी॥नसाजितिलतेलीसातयचतेलावगोभित॥तस्त्रयाकणवद्वि॥द्यानलचविगोषत॥अमलामलेचूर्णवैजयावमजय  
 पिवा॥सुकनस्याधवादकचूर्णकेगविद्वर्न॥ ॥कीटहकितक॥तल्यलियकाव॥कीटहकितक॥नास्त्रानस्त्रनयधयि  
 हाअनेनकिथमायातिरुथानामालितलुल॥ ॥कणयतनी॥कलितरुहावितपिपलीचूर्णनचिकनरुगोननयति॥मकुतस

30

5

नसमथामलकमधेदहनतालकैर्गंधकचूर्णचपिष्ठापकावनालके॥तनलिकाकचोद्यमस्तिगच्छनितकलताग  
 न्मकंतालकचूर्णस्वयंनचाजमुजत॥पिष्ठासपननामास्रातधप्रववतुली॥हनितालंरिवचूर्णनामाधविनेयतिकि  
 लुकीकावी॥रुगमणुलकेनाया॥ककतलंलेयनदंति॥कप्रनहत्वातकगविचूर्णकानाहवानांयमन॥निलावातिलनप  
 कंहनितालमिर्णकतिलामनागचरुवचैसय॥ ॥सद्यक॥तल्यतनी॥लिकर्मकोलतिलनमडितप्रववचिन्न॥प्रवव  
 क॥तिवथ॥सद्यचंवनसंगय॥ ॥खडितक॥नानाल्यलियकाव॥पिपीलिकानास्त्रलानाकश्रानासुगहृदयत॥सुया  
 लुक्कडतचूर्णचक्रुहलालयसुदा॥प्रवखडितक॥नानांनयभाहवतकचित॥ ॥अथयुकाहनी॥धानदमेदथिनि  
 क॥कषधरुनजेधवे॥नागवलीदलेवाधवसुखल्यकल्यथ॥तद्वर्णमरुकेवष्ट्र॥धाय्यामधयंतत॥युका॥यततिनि॥

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



वीसलिकाताडसंगय॥ लाकारुन्नामकीमला कृष्टगुञ्जलसर्षपाताविठ्ठलसमर्चार्थं ध्यायकाविनाशन॥ ॥  
 लकमखचाया॥ प्रियगुञ्जलपिष्टेवा दामतगमिका। आधकेस्यधर्ववाथ, दिवतकम॥ विदिवहंसिदलस्यच  
 र्कवर्तिलसंयुती॥ कीद्वर्कटकायावाहलडावविलपथन। वृन्दलकमखचायागर्हनिनेसंगय॥ ॥ अथकृष्णविदि  
 ॥ मूललीकतसुन्दुमहिषीनवतीरुकी। अश्वगन्धवचाकेषुगजपिपलिकाममं॥ महिषीनवतीरुततयाकृष्णविवर्ध  
 यतावनाहाकेनतेतनतयाकृष्णविवर्धत॥ अश्वगन्धवचानकंचन्दनसर्षपसमी। जलपिष्टंयुथाकवीकृष्णवर्धनम  
 रुमी॥ ॥ कचवर्धनी॥ मध्याह्निमहिषीकालकंजनालसहस्रगिनी। वसाहिष्वासीजननी। वर्धितयाभिनीकची॥ महिषी  
 नवतीगन्धगन्धकक्षनापयली। वचांचपिष्टातल्लयावर्धितयवसीकची॥ ॥ श्रीमुखकान्तिकवर्ण॥ जातीरुलवचपिष्ट

जलपनमाचयता। मुखकायाकनीश्रीलामहिषीकीनतापिवा॥ तिस्रचंचनिगमलाधसिद्धार्थमध्याह्निहृषापिष्टाहिना  
 नतीलेकंजयत्यहोपदंनवी॥ अथपूजनवांमूलसुपाकीमूलसंयुती॥ उद्धर्तनहयतुलीलंमुखकायासुइ॥ सुकांकलाह  
 निर्वाचममथाकृष्णसतवा॥ ततस्वाहसिद्धमद्वलीधर्षलमुखवर्धकृत॥ ॥ ग्यामिकाहवर्ण॥ महिषीकीनसंयुर्षवजतीनकचम  
 नीकतलेधानिहृषासुग्यामिकोगुथोकिनी॥ ॥ योवनपिठकहनेर्ण॥ वनिकाचवचालाधमहिषीकीनकीलेहतायोवनपिठ  
 काकृत्ति, लेपयन्ताउसंगय॥ ॥ ततकाकिसीनरुकवर्ण॥ लोधककृत्तिलेधडीद्वयसिद्धार्थसंयुती॥ लिफागंकोलपिल्लासी  
 काकिसीनरुमाप्रयात॥ तिलसर्षपकृष्णानांरुन्नांरुन्नांनपि। पिष्टनयवहमानांस्त्रीधवचवर्धय॥ ॥ गनीवइग्ज  
 नहवर्ण॥ असकदहयोर्जन्म। लिपाचिवापलपव॥ गमूखलसमायुकी, अथवामाहिषीसकृत॥ इग्जन्मिनीग्रमूलानिनाजीनस



15

को

७२

नमो नमो शेषहो नमो नमो जित सिद्धिं तं लं विचरा दल पदेषा निदाद्यद्यम्य ऊं स्वयं इनामादी विमृशति ॥ ॥ वदन इग्नं मरु नदी ॥  
 मृत्ता धान्यक कर्पूर कण्ठ लोम धूय हि हि ॥ वचित ॥ कवला वकं कृत सु न्यति गंध नर ॥ सवसा मा उल्लंग स्य संयुता मधु मयिषा ॥  
 नाल (७) विषय ह धायं मूर्च्छि (७) यं स संभव ॥ (७) जले ४ यथि ताम मया निजि कृषक लो (७) चिता ॥ वदन स्य इनामादी ति हीति ये निशील  
 ता ॥ ॥ याद को म लंक वली ॥ (७) विरि कं सि कृ कं स ऊं न सी च पु ठ म स वेशं स चू (७) गाय त ने तं स्ते पा ह स्या त को म लं पदं ॥ पीता ति तै व  
 य जालि न ऊ न्या सह ध य तं ल धायं म र व या दा सीं य म्म व ल्क नू त रु गी ॥ ॥ या द स्यु टि त हु न दी ॥ के न रे ३ वी ऊं न ऊ नी क दू ड यं स  
 मान रु गी ल व लं स म हि का द म्म सि मा ला य द न तं ले य थ त पा दो य दं स्यु टि तै वित स्य ति ॥ छु कि का रु स्य सिं ध ल्क स यि ४ स ऊं न सी यं य  
 ४ या द या ४ स्यु टि ले य न सि का ला व रु ला कि त ४ ॥ ति ल ल व लो हु वि द्यो उ ल्यो रु (७) स म र्म स म हि य त व नी तं हु म वी ऊं स चू ॥ य पु ज न

10

७

य नि य क्कं भदिनी पूत मा ऊं स्यु टि त व न लं ले यं वा ल या दं क य ति ॥ ॥ रु ध वि व य पा द वि कि ल ॥ पू न थ द वि इ (७) व न वि ध यो कं ट  
 के न उ उ छ त न रु क्त वा सि न्ये त कि स्र य म व त न ॥ सै म र्म त उ र्म र्मा य द हं स्या ह ग ला क या ॥ ७ ॥ य इ धू न व धी या ल्क मां य वा द ल  
 न त न ॥ ल व लो द क स कं वो संधा ना द न व ध नी ते पु ली य क म्म लो न्यं ल व नं स पू न न वी ॥ पू न न वा व वा स र्व चि त्तो वा स न हं स य ती  
 वि चो क नं ज य दी वा द नं का जि क रं य ती ॥ न र्म य व ध नं क य्या तं या द स क न दू ष ऊं ॥ व नं किय वि क र्म य को इ र्म य न दं हं ता ॥  
 द ह स्यु टि त हु न दी ॥ अ ग स्य य य चू लं न मा हि षी वि य थ त्य य ४ तं इ ल्क न व ती ता का द ह स्य स्यु टि त ज थ ता ॥ ॥ अ थ व श्वि को दि  
 वि ष ह न ॥ य य य न न वा मू लं पि ष्ठा ना य त य ४ पि व त ॥ अ व प्रा ली ति त त्या (७) व श्वि का नी वि षा द य ४ ॥ म ल था न क व र्म यि ४ पू ष  
 पि ष्ठी पि व ऊ ली न तं द ना ति षं मा सा रु मा य षा न रु ऊं ग म ४ ॥ मू लं पू न न वा या थ त त्या नी ज न ल य त ४ ॥ हो ति स य वि षं य र्म य

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35







५५

नृपा॥ अर्द्धगुरुयथा यद्वर्द्धगुणिकर्षिका॥ पातलयननस्याधे॥ हृत्ति सप्याविषातिच॥ मन्नागवीजमकस्यकीवणसह  
मदयतालयताद्विषिकविषं हृत्तितीव्रव्याकृषात्॥ अर्द्धकीवविषेयध्या॥ गङ्गाधिरुत्ताकली॥ इन्द्राविमदहृत्तिमोहाग्यति  
तज्जलसमी॥ नाविकलारुसापिष्ठथाजथन्मतिमानहिप्रका॥ भजककीवकिष्टतिहिलनलनसचयत॥ मधुचन्दनानेमाकु  
जैवगथनलययत॥ हृत्तातकतिइकं विलिखिविक्लेरुहेश॥ पूननवाभयनादविनहयमवीनकी॥ पिक्काद्यतनतन्निधे  
सप्याकविप्रिहृत्ति॥ केरुनागविषवर्द्ध॥ हृत्ताचवसाहिर्न॥ अस्तयकगानिजजलमोवाकीवकदतहृगदलीच॥ गिलाजितोनी  
लिमूलविषवाहृत्ताविर्ग॥ समसध्याष्टजगमहिर्मवलिनिधन॥ ककृष्टसाविषिहृत्ति॥ उमरकेलिसवित॥ वसानगीघिना  
गायतलयकाहृतीतकी॥ अहयायाउतकीवध्याम्लकलसंशयी॥ तिकालावीर्णगवनमंनंमपिर्तहिर्न॥ गन्धकस्थविषिहृत्ति



15

को

४३

गतप्रवृत्तिचयनं॥प्राचदंमृतिप्रवृत्तिचयनं॥दिग्गुलिका।माधवास्तुयतिविषयशीमधुकमृत्युली॥कावस्तुविषयं  
 वंहायप्रथमजयत।युगाहलंचननचं वसनाहावनासिता॥८८॥ संयकायननावनमोवनश।लोगत्यास्तुविषयं हतिपुं  
 तर्कसचनन॥दंतीविषयानिमदं तर्कपुं०॥मिषि०॥दिक्कायासितातर्कप्रतिमदहृतंजली॥कनवेनीत्यायकं कीनमंश्व  
 संयतीधरुनस्याविषयकीकमलखंडनकना॥नयालस्यविषयं हति तर्ककाव्यासयजुं।स्वककाविकलीमेलं श्रीकालमाधिता  
 निशा॥सकलंकेगलंलोह॥अन्यानीसमाहिता।दक्षिमधेहिस्त्रीकुंडं प्रीतिमयवृत्ता॥गकमृतादिविहारीमस्तुतकास्तुकाजिक  
 ॥ ॥अथवस्तुकीलसिक्तातकनली॥तागकगमवचुर्लुगमयतंनदिनपूजा।रुक्तागकीवरुकवरुं शकसायुधिनीरुवेन॥  
 ऊरुपुजतन्याकिंविनिविक्तियासयतं।नयेदक्षिणेविवंन विहितवैद्यारुवेस्तुतिनी॥लक्षणयामयुत्राजिस्वयावाजदीप्तिता

10

७

पूतगद्यतयसाकनातिसुतिनीक्षिप्य॥ ॥सुखप्रसूतिशाहिंयुसेधवथाध्वर्कप्रीतिमाननावायक।गीधप्रसवकदध्याक  
 यीधरुजगयिवा॥यानिरुपस्यवाकाकजंघावाधजयाधवा।अपामार्गस्यवध्याकीकयाचिवप्रसूतिहृत्प्रापयामार्गजदयाध्या  
 वेकाथवायिता।श्रुक्तेनेवसदृशीप्रसूतिक्वृत्तैध्व॥तदपामार्गमूलस्यमधुस्थालिकथायदि।जायतेइहिलतावतपूजाह्ये  
 निष्वयशावप्यजाहिनिभक्ति॥सुअहानलयाजिका॥  
 कीप्रवृत्तीलविकैहलाधके॥समसिग्नव्यइग्वनपीतनालहिवावेला॥स्तितायोगरुवस्यानेयायतमीनस्यवयुल्लक्षणी  
 लिपिर्हउल्ल्यागकनाकालाइवनिमामूलयुथेनेसहयाविता॥पिवस्यागरुयततं नरुवेन्राजसंशयशकुलातेलगत  
 मृतपिण्डश्राद्धनययसासमी॥मधुमिष्यलेपयुक्तागरुधातीतिवावयत।यस्यागरुहृवेत्यावकसवतितामेलीया

याम

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15  
10  
5  
0

को

भावतस्य सहसा योजयत्तु लादके ॥ स्त्रीलंघ्यसूतिमूर्ध्नि सितां वृज कंठस्य न्यासात् प्रयसा न गतः ॥ याता च कांगमू  
लस्य यदंशान् गच्छति ॥ क्रिया ॥ पिष्ट्वा तत्तु लताय न वला कृणुज ॥ समा ॥ पिष्ट्वा सद्यः न रंज ॥ यदवर्जितं ॥ इवमि  
दं नो नदं वां प्रसविष्याति पिष्ट्वा तं समो किं कर्तंति ॥ इति यदंशं नो वचितं च कल्पनी ॥ अथ दानं सितं रुधिरं न नदं वा सव  
प्रविष्टं ॥ अथ कल्पेन विना दनानि किंचित्कानि चित्कल्पक कवालय मरुवाति नि नूयते ॥ ॥ तत्र के ल्यव कवालय यथा ॥ क  
ल्पकस्य वालो ह्यो हा गे गंधका गे पिष्ट्वा ककुल वत्त इयत्र का नं दाय स्यात् ॥ पिष्ट्वा तद्वत् नार्जी ॥ अथ यम पिष्ट्वा गे द्यो न च  
लिष्ट्वा उर्यं चिदं ॥ मंल यिला च गति नं ॥ पिष्ट्वा दं न वत्त न ॥ चूर्णं लोहस्य ती कस्य मलि सार्धं प्रल दय ॥ तवति कमिती ताय ॥  
पिष्ट्वा गंधक मय्यह ॥ समिष्टं स्यात् पिष्ट्वा थं पूर्व गंधक समिष्टं ॥ तव नीति जले ॥ पिष्ट्वा तालो ह चूर्णं ॥ मिष्ट्वा यथा विमर्षं

३३

७

४२

कला तदपि स्यात् ॥ तां अहं वं जांगला रवीं च मय कतं च विंशती ल कं चति पथ कं सार्धं निष्क च उदय ॥ मिष्ट्वा यिलाप  
नी मालं चूर्णं मिष्ट्वा लो स्यात् ॥ यवा ग्वा गे पिष्ट्वा तदयं च विमिष्टं यत् ॥ वत्ता च उदं यमिष्टं गंधकादि ॥ न्यक्तं ॥ सीम  
यला ह चूर्णं न्यो डाष क्षाति यत् नं पुनः ॥ मिष्ट्वा ॥ रवादि नं दानु ली लन तये न न्मू ॥ अथ यमं तस या वं दृष्टं रुवति नाल  
कं ॥ नाला स्य वहि कं दया दत्त विष्टं ल दय ॥ एवं कतं च वहि कं निरुध न स मरुत ल ॥ नालं यथा न जानी यू ॥ कपि श्रुति स्मृता  
विष्टं ॥ यदंशं तस्य स मं सु या नं त दहिका यत् ॥ धा नय च दतिक ल स्यात् ॥ स ह म हा न व ॥ उ सै न्नि सति तं ॥ यथा दहि क  
वयादि ॥ कल्पक का द्विष्ट्वा क एषता लो रुता व ॥ ॥ अथ चाम न व ॥ यव का न स्य स फां न न कं ग नं गं क दय ॥ गंध  
कस्य च हा गे न सु पिष्ट्वा धा न्म वा निष्ठा ॥ मंल यही कृ ला ह स्य हा ग म कं चि यं पु वत् ॥ मदि तं न सै था अ व ॥ नालं विनि कि प्रत् ॥ सचा



15

को

30

मन्त्राख्यानालायदीकालाकविनादकत॥ ॥ **चन्द्रशक्तिमु** ॥ चतुर्निष्कयमालाङ्कितानकचूर्णयुक्तत॥ तावन्मानवनेवर्गधर्म्म  
 दयितुत॥ यवकावचनखैव मर्दयन्तु रनिष्कका॥ आख्यायालमावेवविष्णुकाउयसीमित॥ एकादशेनखवीजमजासंमर्दय  
 त॥ चतुर्निष्कयमालाङ्कितसूतसीयाश्मर्दयत॥ तत॥ काकतमानियवलेनर्यानेवस्यत॥ सीधिनस्यान्निषिद्धनसंधायसूदरतत॥  
 तन्मच्छानिहितवेषू मूढस्योपायिधायचातमिनाधकतसर्वमोषधंप्रनयत्सूधी॥ तस्योपवक्रिसंयोगचन्द्रशक्तिवितीवित॥ ॥  
 अथचयकवाला॥ यवकावस्यपुष्कस्यजिकेनयथममृद॥ चूर्णयच्चतुर्गुणतनगन्धकेकागमिषितान॥ गंधकविषुली॥ साक  
 मर्कागोवैमर्दिन॥ पश्चादाद्वजले॥ सिंचततत्सर्वमृदचूर्णयत॥ तत॥ गंधकउल्यगि मूढवीजयमालका॥ तीकूलाहोहवचूर्णमो  
 षधेतज्याजयत्॥ तद्वजनालसूदर॥ तिकिधेदोषधंदर॥ तद्वजस्यायिमर्गागमिगुलीजयसीमित॥ उषधनासमासाधसूदरयुक्तयन्म

10

0

ना॥ तद्वजस्यतलविदकलावलिपिदीपयत॥ यंचवापलङ्कितस्यातमनदाध्यर्थाकारक॥ ॥ **पूष्यवर्हिमु** ॥ यवकावसमृद्ध  
 हागेद्विदगहिर्युत॥ गंधकहागमातीयअचकारतथेवच॥ जितंयभलपित्वाउचूर्णयित्वातत॥ यवी मूढलसज्वकलोतसर्व  
 पानिचूर्णयत॥ तीकूलाहोहवजस्यावांसीयुक्तचूर्णयत॥ यथाकावदमानस्यात्तत्सर्वयाजयत॥ संप्रयत्रचिचनोले  
 काकतविनिमित्त॥ तस्याग्रवक्रिसंयोगपूष्यवर्हिनितीवित॥ ॥ **अथचूर्णद्वीपसुत्रो** ॥ यवकावस्यदीहागवैकवैगंधक  
 स्यच॥ अर्कागवस्यसाधर्गमर्दयेदालमवात्रिण॥ तत॥ काकतनालउततचूर्णविन्यसक्तनी॥ तद्विन्यासयकावमुपंचवषातिका  
 केजातकमात॥ मधोमधन्यसचूर्णउपयुपनिचक्रिषत॥ अथपश्चात्तसेदसिक्कलयित्वाग्निनाखजत॥ चूर्णननिनसारवायवाला  
 ॥ कीउकेकानकी॥ ॥ तीकूलाहो॥ यवकावसमसागेसाधहागवैगंधकी॥ अर्कागवसाधहागेमूढलसिचयधयत॥ खहाग

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



五

नवादितीयमंशं च मलयधनिहालिका तथा दसमि ततश्च कृषयश्च ततश्च ४ यव ॥ तृतीयमंशमर्कलकी वलासि च १॥ अथ तत्कता  
अमिथतायां नमन्यज्ज्वायथस्तुधी ॥ यवकानयनार्द्धं रुगमादाय यत्ततश्च सुक्कलहा गस्यभलायित्वा ततश्च ४ यव ॥ निमा  
यिता कंतना लंडु तश्च चूर्णं वितिकिपत ॥ तन्निरूपय कानसु यवकानयनं नज ४ ॥ अथ वैचन्यसंज्ञा हं चूर्णं रुगं ततश्च किपत ॥ यव  
खिलो हं चूर्णं रुगे कात्पूनय न्मरुशे ॥ मध्वमध्वकिप चूर्णं यवकानयनं कमाता ॥ न्यादफोरुयं चूर्णं दृढं संधूनय कति ४ ॥ स  
काचयित्वा तीलाय मग्निनाथा जय कृत ४ ॥ इत्ययं कंतना ताला तक्षा ताला कसुभायमा ४ ॥ पूष्यवाहं विर्यं रक्षा ता जनविहमभाहना ॥  
॥ अथ दानं संकललाकायका नं कं यवमकोठका हं कं पंदिजला सयनि म्मा ॥ एतां प्रायानि मा नखा इत्यादिनि वसुता प्राय  
गितां याति नूय न्नां किपत ॥ उवपा ॥ एवमीधे च वल्मीकं दकि ॥ एतथा पून द्वितथस्या इ लयतवा निनिष्ठल ॥ मत्स्याध्वन



15

को

३९

धतस्मिन्निनायावावताकृतिः। विनातिनीलमस्तुच, तिष्ठदपिचिनींजली॥ उईवनस्यपा। वेचदलीकीप्रविभक्तः॥ हस्त  
 यमितेद्वेनेलस्यतपूषधय॥ सार्धनिवातताधकातदस्थतसजलानिना॥ दृष्टतयदिवलीकी, पूर्वनेवदतीतन॥ जिहिननेमस्त  
 पश्चातकुर्येवायुधेयपूष॥ गृहमावासितंविनीं तयेवाविरुवेहृतः॥ विल्लाईवनयाथवायुधतदकिलवती॥ जिहस्तवियकृता  
 यांश्वेस्यात्युपेक्षितः॥ विहीतकस्यपावेचतवेलीकीहस्तममित॥ चउहिः॥ पूषमाध, तडादीवीनिवाकृवत॥ अथायनेक  
 नृका, कुरुहायस्यकस्यचित॥ तस्माद्वमंथउहिःस्यात् साहाय्योपिपूष॥ दणकंविनकोवकानिजलियउदस्थत॥ जिहस्तवियकृता  
 यांतस्याचादकिलमस्वी॥ निनावहतिमन्नीनाकेपोतस्याथदस्थत॥ अस्तुजगन्मस्तुथाकानांमूर्तिवसितंजली॥ वलीकस्थकनीज  
 स्यदस्थतदकिलदिशि॥ जिहस्तकदकिलतः॥ मितासाधदिनउय॥ ननाधेदस्थतकृमः॥ यादूखीचनिनादिमा॥ स्वाध्वनतीमगासा

10

७

हतास्मादथवायथा॥ ताकः॥ सकृद्वर्चस्विलकदिदलादिनि॥ तत्पश्चात्यवनयास्यात्पादूखीसजलानिना॥ पश्चाद्यदिक  
 दवस्येनाकदकिलतस्तः॥ जिहस्तपवतः॥ उहिः॥ पूषः॥ सजलानिना॥ वहयददूखीकीर्यं अस्तुत्वास्यात्सुगंधिवास्यातामित  
 तउविनींमष्टकामस्तुसेनिहृ॥ तादृशीमहिकाचापिस्वातपूषमाजक॥ नाविकलाथवातालाताकोनप्रविणयदि॥ षट्  
 नाकः॥ प्रनेयथाचउनेयाणिनाहवता॥ नाकवास्तुकस्यवदनीवीकृततः॥ उदकपनीषट्कवतः॥ सार्धयुष्ट्यातनउय॥ प्र  
 थमपूषकृमाइषनाम्मासवातुको॥ मृच्छिनेधसविनाति, दकिलेहृवदिगतं॥ वल्लेक्रमस्यवामेध, वलीकरुस्यपूवतः॥  
 षट्पेयवधानेद्वेपूषेनसहिहवता॥ कालाहिपूषमस्तुयातामवतकायमा॥ यावायदीयुदीयाथदलिननेनउलक  
 ली॥ तस्याथतापदिनास्यादणदणकेभयदि॥ तदधः॥ पूषेखात, कुर्येवाविरुवदिति॥ पातालीकसुमानांवाविकानायज

नृ२

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



15

10

5

0

या ४

हृदयतः॥ विहसतः पर्वस्या कल्याक उरुर्न वैर्जली पीलावेना नदो वल्मीकस्यास्य पश्चिम ॥ स्वातः पर्यवहि कृत्या सज्जला दम्  
 स्वीलना रवनन समथं मूढं यथा धारं सरु वेत हृदयका न उच्यते ॥ ॥ हृदयदातीति लिता हदानी पलासका ४८ महति नूका  
 कानी ॥ यका लालित्वा नलमग्निवक्त्रं सुधी वसिका यविना न भति ॥ तायं म दामा किं क रुस्य नावयत्स फ कं लोप विषवर्न वन ॥ का  
 यालितं कानय नलि लाया ४ प्रसू ८ ते वक्रिहि नाचिता ॥ ४४ व ध को उकाति ॥ ॥ अथ गी व रूपा ली को उकाति सं गृह्यते ॥ त  
 यवि विषवी धष च कर्वे धा ॥ सत्वे मान विनिष्कृमा जि न रुसा दा ले व रु वं यथा ल द्वा ग क य पु वि द्रु त त न ४ ग्री व ल रु ति म्भू दा म्का  
 काम मया सही ४ य न म ग वा ध ४ स ना न न्द न द वा धे ४ स म काल मं ग्र म्द या नी पे रु दा त रु ने ॥ ॥ अथ च ॥ य आ ना के ह र्ष व द त स रु ता  
 ग्री म ल्प द हं न ध ल्प ला न अ य वि ष हं ज न प धं स रू ता ना का ले ये ॥ स र्थ सि ध नो ध पा ले न त व आ ति ४ स रु व म्भ दा दा सी ना य न मो ल्प

की

न ०

वैसु सहितं दहा दये न्ने ४ सदा ॥ ॥ अथ च ॥ गच्छति किति मं तु ली किति रुता य स्य धता या वला य स्य किं प्र वि सु व त्थ र्ति न ता ल म्भी  
 ऊ गे रु ह नि ॥ सत्थ चारि न ता य स न्ना ति पु रान धा ज ना आ स्य द द य ए ग ल ना य का य स क ली ना अ ध नि ष ड् डि द ॥ ॥ अथ च ॥  
 स र्थ ना म त वे व वे ह व मि दी या इ रु री सा ग र्थ य हा वा न य र्थ गं वा य व ग ता या न य न ती ल या ॥ ॥ उदा न क म ल्प ॥ द न मं तु  
 ल वे र्वा त्म क न व मं तु ल व हि च के व ध रु ता ने व का न वि ष ति का ष ड् ड क र्थ नं प्र कि उ र्थं स स स र्थ या लि खि ता त व क स्या थि का  
 वाम पा र्श्वे क म ल आ य पा द मा लि ख्य त दा या द कि ष्ण न द्वि ती य रु ती य य की द्वि ती य रु ती य पा दी लि खि ता त मि रु ता न वा का र्थ  
 ता क न का ष ड् ड य न स रु व्वा द न को षे मा लि खि ता रु ती य पा दा न व र्ण मी न य या द कि ष्ण न च उ र्थ पा दी लि खि ता स मा य र्थ दा व  
 उ ना हि रु ता न आ य पा द उ य द न मा क ने र्वा द ॥ त दा य क व ४ स रु वा क व ल य च उ र्थ पा दी दा य ॥ रु ती य पा दा क व ४ ने स रु

का

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35











15

को

१३

पञ्चाह्निक ॥३॥

किमप्युच्यते ॥ **कर्तव्यं** ॥ मम मरु मयून स्य पृष्ठमाव्यवता गिवा सीता विनहसं माह पुनः पुनः नमः ॥ ॥  
 सीधे गायकं यथा ॥ वटवृक्षमहा नमः माग्नमावह्यतिष्ठति तावरु अवतिष्ठामियावदप्यजया स्याति ॥ **सर्वं** ॥ य  
 यामदिना पन्ना रुवं किमवता वता ॥ गायिका ४ के रूपादात ४ कर्मादिक नलं किया ॥ ॥ **वृक्ष** ॥ वमादि ॥ अकृत्रिहिरुदनादि  
 धा ॥ ॥ **तद्वर्ग** ॥ ॥ **पञ्चाह्निक** ॥ नाह् ४ सर्वाधर्न किस्मा तस्यैव स्य चका पियाति धनाथ किमिच्छति किं क्वचिन्नित पाधन ॥  
 ॥ **दवता** ॥ नाधर्न ॥ प्रहर्तकी दृष्टि वाम पमा ॥ की दृष्टि विवे ॥ अधगी वल हाया स्या भक भवतु न वद ॥ उरु म उ ॥ तीता ॥ ॥  
 अतः ॥ **पञ्चाह्निक** ॥ किं रूषली स्त्री क्वचमं तु लाना की दृष्टि माय च मस ४ कन ४ ॥ ॥ किमाह सीता दल क ४ सीता हा नाम हा दवनात  
 मात ॥ ॥ **अथ** ॥ ताना भमा च विस्व पत्ति नमा कन म वृक्ष य ४ क कस्या हा उ उ य लुधि विन क्वचत ला ववाध ॥

10

5

वशनसुधा नाच नखल विगर्त के कवर्क रु हावा ४ सुवर्त त्यालिन ४ कि वि क सति स ह्या किता हा स नयि ॥ **अथ** ॥ शक्ति  
 श्रीत नय ४ वरु कृष्ण कति वरु ४ स वृक्ष य ४ के क स्य पमा तता ॥ लुग्विक न ॥ पयिना वदि कां क्वचिन्नित ४ स्व क खाद क कलं ४ ॥ म  
 गयुर्व नील क किं यवा याव का था ॥ वा ४ वली समेत सिकलित के धन आ हा रु दाना ॥ ॥ **वि** ॥ वि हा के ले भा यथा ॥ य भवत्या  
 दय भेष लत जन मना ही दान य वी ॥ वरु गे हा वि न द को वि ह न ल वि रु व या फ सी हा ग्रं सी ॥ वि क स न नादि द व पिय त म  
 नुलि म स्य म स्य स धा ॥ ना ना न लो नू का नि य क न प नि ल स न य ४ य ४ जा पि धन ॥ ॥ **वचन** ॥ भा यथा ॥ रु कि य क वि लो क न  
 यला यिली नी लो ल स्य दिनी धा ता ल व न तां समा धि नि न ता नी न हि न या फ थ ॥ ला व न्य स्य म हा नि धी न मि क तां ल श्री द ॥ गे ल न  
 नी युष्मा के न तां रु वा हि सम न त य न न व हा हि ॥ ॥ **हावा** ॥ ल भा यथा ॥ कि वा रु न ला वि क्व द दान ग या सक नि ला ॥ काम क्व

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35



















ॐ॥१॥४॥कुर्कुंदनीनमवाण  
 ॐ॥१॥१॥तीक्ष्णनाल॥  
 ॐ॥२॥३॥प्रववाणकन॥  
 ॐ॥१॥३॥कृपादिजलामय  
 ॐ॥२॥२॥कुंदनयकान॥  
 ॐ॥२॥४॥गवदप्रालिखि  
 ॐ॥२॥३॥श्रुत्यत्र

ॐ॥१॥१॥श्रुत्यत्र  
 ॐ॥१॥२॥श्रुत्यत्र  
 ॐ॥१॥३॥उज्जयकम  
 ॐ॥२॥१॥नागवध  
 ॐ॥२॥३॥ममृदिका  
 ॐ॥२॥३॥लकमन  
 ॐ॥२॥३॥सर्वगुरुदे

ॐ॥२॥३॥नृद्वानमु  
 ॐ॥२॥१॥सर्वगवाच  
 ॐ॥२॥२॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥४॥श्रुद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥१॥मृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल

ॐ॥२॥२॥गवदप्रालि  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥१॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल

ॐ॥२॥२॥सर्वगवाच  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल

ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल  
 ॐ॥२॥३॥नृद्वानल